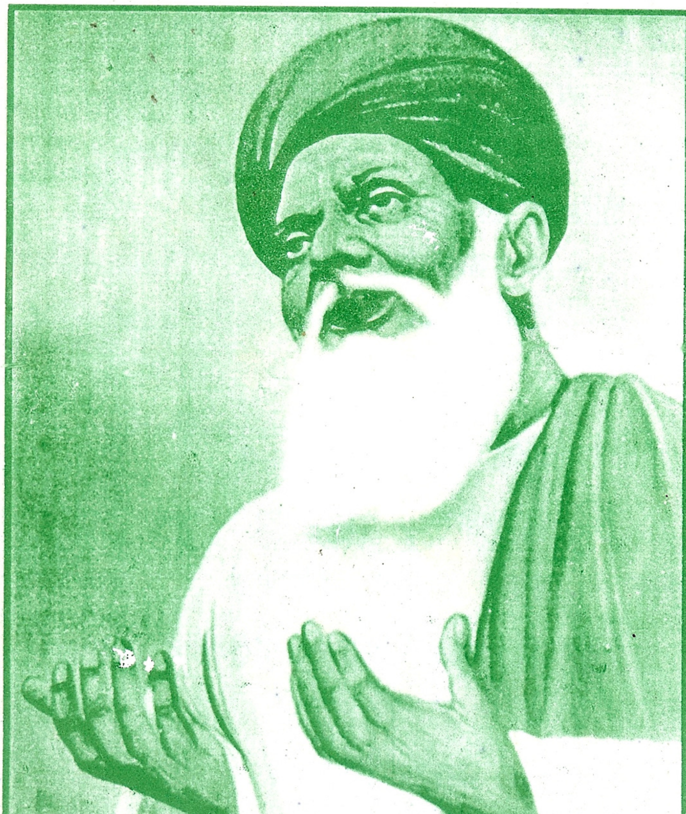
फरीदवाणी का सन्दर्भ



डॉ. निर्मल कौशिक
कामायनी कौशिक

FARIDVANI KA SANDHARABH
EDITED BY : Dr. Nirmal Kaushik,
Kamayani Kaushik

फरीदवाणी का सन्दर्भ

सम्पादकद्वय डॉ. निर्मल कौशिक,
कामायनी कौशिक

प्रथम संस्करण - 2004 1000 प्रतियां
द्वितीय संस्करण - 2007 2500 प्रतियां

मूल्य : 30-00 रुपये मात्र

प्रकाशक :- जनक राज शर्मा, निदेशक
ऐजूकेटर्ज सोसाईटी, (रजि:) फरीदकोट (पंजाब)

मुद्रक : मंदाला आर्ट प्रिंटरज
फरीदकोट-151203
दूरभाष 01639-250121

फरीदवाणी का सन्दर्भ

डॉ निर्मल कौशिक
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सरकारी बृजेन्द्र कालेज, फरीदकोट – 151203
एवं
कामायनी कौशिक
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
केन्द्रीय विद्यालय फरीदकोट छावनी–१५१२०३

ऐजूकेटर्ज सोसाईटी, (रजि:) फरीदकोट- 151203

पूर्व कथन

भारत की पुण्यभूमि पर अनेक सिद्ध–साधकों ऋषियों – मुनियों और गुरुओं – पीरों ने जन्म लेकर समय–समय पर मानव जाति का उद्धार करने हेतु अपने जीवन के अनुभवों से मार्गदर्शन किया । उनका आध्यात्मिक चिन्तन युगों–2 तक अमर हो गया । यही कारण है कि भारत आध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टि ये विश्यगुरु माना जाता है । पंजाब की ध ारती को इस बात का गर्व है कि यहां अनेक साधकों और गुरुओं ने अपनी वाणी के माध्यम से मानव को इहलोक और परलोक में अपने जीवन को सार्थक करने वाले मूलमन्त्रों से अवगत कराया । श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चारो दिशाओं में की गई उदासियाँ इसी बात को इंगित करती हैं । पंचम गुरु अर्जुन देव जी द्वारा श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सम्पादन राष्ट्रीय एकता, भ्रातृभाव, सद्भावना और विश्वन्धुत्व का पुष्ट प्रमाण है । गुरु अर्जुन देव जी ने सूफी दरवेश बाबा शेख फरीद जी के 112 श्लोकों और 4 शब्दों को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित कर उनकी वाणी को प्रामाणिकता और अमरत्व प्रदान किया ।

शेख फरीद जी की वाणी सन्तप्त एवं तनावग्रस्त हृदयों को शान्ति प्रदान करती है । उनकी अमूल्य वाणी आज भी उतनी ही प्रांसगिक और सार्थक है जितनी उनके अपने युग में थी । उनके इस मानवतावादी अमर सन्देश को भावी पीढ़ी तक पहुंचाना हमारा दायित्व है । विभिन्न आलेखों के माध्यम से हमने उनके जीवन और दर्शन के अनेक आयामों को पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास किया है । उनकी वाणी का प्रत्येक शब्द 'गुरुमन्त्र' के समान है । फरीदवाणी आज के अज्ञानान्धकार में भटकते हुए मानव के लिए प्रकाश – स्तम्भ के समान है ।

'फरीद वाणी का सन्दर्भ' पुस्तक प्रकाशन का उद्देश्य फरीद जी की वाणी में समाहित उनके लोकोपयोगी एवं कल्याणकारी सन्देश को उन लोगों तक पहुँचाना है जो केवल हिन्दी भाषा का ज्ञान रखते हैं और हिन्दी भाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा नहीं जानते । आशा ही नही विश्वास है कि पाठक इस पुस्तक के माध्यम से फरीद जी के जीवन और उनकी वाणी के विषय में जानकर अवश्य लाभान्वित होगें ।

1–सितम्बर 2007

सम्पादकद्वय
निर्मल कौशिक (डॉ)
कामायनी कौशिक

शुभकामनाएँ



मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि बाबा शेख फरीद जी के आगमनोत्सव के उपलक्ष्य में डॉ निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक द्वारा 'फरीदवाणी का सन्दर्भ' पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है । निश्चय ही यह एक प्रशंसनीय कदम है ।

फरीदकोट में ही नहीं बल्कि विश्व भर में लोगों की फरीद के प्रति अपार श्रद्धा होने के बावजूद गुरुमुखी लिपि व पंजाबी भाषा से अपरिचित होने के कारण वे फरीदवाणी को पढ़ने में असमर्थ रहे क्योंकि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित फरीद वाणी पंजाबी भाषा व गुरुमुखी लिपि में अंकित है ।

फरीदवाणी का हिन्दी में लिप्यन्तरण व सरलार्थ प्रस्तुत कर सम्पादकद्वय ने हिन्दी पढ़ने लिखने वाले पाठकों के लिए फरीदवाणी के अध्ययन का मार्ग सरल कर दिया है । आज ऐसी पुस्तकों की नितान्त आवश्यकता है जो एक भाषा में रचित सद्साहित्य को दूसरी भाषा मे प्रस्तुत कर सके । मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक से पाठकगण अवश्य लाभ उठा सकेंगे । विशेष रूप से वे पाठक जो केवल हिन्दी भाषा जानते है और हिन्दी के बिना कोई दूसरी भाषा नहीं जानते, वे भी फरीद जी की वाणी और दर्शन से परिचित हो सकेंगे ।

मैं बाबा फरीद का मुख्य सेवादार होने के नाते सम्पादकद्वय का धन्यवादी हूँ जिन्होने लोकहित के लिए इस पुस्तिका को तैयार किया । मै कामना करता हूँ कि इन पर बाबा फरीद जी की अपार कृपा सदैव बनी रहे ।

मैं डॉ निर्मल कौशिक व श्रीमती कामायनी कौशिक की कृति 'फरीदवाणी का सन्दर्भ' का हार्दिक स्वागत करता हूँ और भविष्य में भी ऐसे सद्साहित्य की रचना प्रकिया को निरन्तर जारी रखने के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ ।

सम्पर्क

98140—71535

98728—01535

शुभकाँक्षी

इन्द्रजीत सिंह खालसा

मुख्य सेवादार

बाबा फरीद शिक्षण संस्थाएँ, फरीदकोट।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित फरीदवाणी

डॉ. निर्मल कौशिक

भारत आरम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में विश्व का गुरु रहा है । ज्ञान के पुँज अनेक ऋषि-मुनियों पीरों-पैगम्बरों एवं सिद्ध साधकों नें अपने अनुभवों से मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है । मानव जीवन के आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष को सुदृढ़ करने हेतु अनेक महापुरुषों ने अपनी दार्शनिक दृष्टि एवं समन्वयवादी चिन्तनधारा के द्वारा व्यष्टि से समष्टि तक का मार्ग प्रशस्त किया । आत्मोन्नति एवं सामाजिक चेतना पर आधारित राष्ट्रीय एकता के लिए इन्होंने आजीवन संघर्ष किया इन्हीं के सद्प्रयत्नों से स्थापित मानव मूल्यों से आज भी मानव जीवन आलोकित हो रहा है ।

पंजाब की धरती को इस बात का गर्व है कि ऋग्वेद से लेकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जैसे विश्व-विख्यात पावन ग्रन्थों का रचनाकार्य इसी पुण्यशालिनी धरती पर हुआ । आदि कवि महर्षि वाल्मीकि से लेकर श्रद्धाराम फिल्लौरी जैसे साधकों ने इसी धरती पर भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया । समय-समय पर अनेक साधकों ने इसी पंजाब की धरती पर जन्म लेकर अपने जीवन के अमूल्य अनुभवों से उपलब्ध अमरत्व प्रदान करने वाले संदेश विश्व को प्रदान किये । गुरु ग्रन्थ साहिब का सम्पादन और उसे गुरु स्वरूप की स्वीकृति इस बात का पुष्ट प्रमाण है और राष्ट्रीय एकता का प्रामाणिक दस्तावेज है । श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज अनेक सन्तों भक्तों गुरुओं की वाणी आज के संतप्त तथा मार्ग से भटके हुए मानव को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करती है । यही कारण है कि आज इसका अमर सन्देश विश्व भर में व्याप्त हो रहा है । ''नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत का भला ।''

बारहवीं शताब्दी में पैदा हुए शेख फरीद के नाम से प्रसिद्ध सूफी कवि की वाणी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उनकी गद्दी पर विराजमान तत्कालीन १२ वें उत्तराधिकारी शेख इब्राहीम से ग्रहण की गई । परम्परागत रूप से यह वाणी पंचमेश श्री गुरु अर्जुन देव जी के पास पहुँची । श्री गुरु अर्जुन देव जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का सम्पादन करते समय फरीद जी के ११२ श्लोक तथा चार शब्द (राग सूही तथा २ राग ललित मे) सम्मिलित किए ।शेख फरीद का जन्म शेख जमालुदीन सुलेमान के घर बीबी कुरशुम की कोख से ५७१ हिजरी (११७५ई०) को गांव

कोठीवाल या (खोतवाल) जिला मुलतान (आज कल पाकिस्तान) में हुआ । कुछ ग्रन्थों में इनका जन्म ५६९ हिजरी (११७३ ई०)भी बताया गया है । उस समय रमजान की पहली रात्रि थी । आकाश बादलों से घिरा होने के कारण चाँद दिखाई नहीं दे रहा था । उस रात लोग परेशान थे कि चांद दिखाई न होने की सूरत में क्या किया जाए ? इतने में एक महापुरुष ने आकर उन्हें सूचना दी कि शेख जमालुदीन सुलेमान के घर एक पुत्र ने जन्म लिया है । अगर उसने अपनी माता का दूध पी लिया है तो हम रोजा नहीं रखेगे अगर उसने अपनी माता का दूध नहीं पिया है तो हम रोजा रखेंगे । पता चला कि फरीद जी ने अपनी माता का दूध नहीं पिया है । कहा जाता है कि फरीद जी ने पूरा रमजान का महीना दिन में अपनी माता का दूध नहीं पिया । केवल रात्रि के समय ही वे अपनी माता का दूध पीते थे ।

फरीद जी के जीवन जुड़े अनेक प्रसंग हमें उनके महान होने का पुष्ट प्रमाण प्रदान करते हैं । पांच वर्ष की अवस्था में उनकी माता ने उन्हें नमाज पढ़ने की प्रेरणा देने के लिए कहा बेटा ! अल्लाह नमाज़ अदा करने वालों को शक्कर देता है । उनकी माता हर रोज शक्कर की पुड़िया (चटाई) के नीचे रख देती । फरीद जी उसे नमाज पढ़ने के बाद अल्लाह की दी हुई पुड़िया समझ कर खा लेते ।

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिउ माझा दुधु ॥
सभे वस्तु मिठिआं रब न पूजनि तुधु ॥२७॥

एक दिन किसी कार्यवश उनकी माता शक्कर की पुड़िया रखना भूल गई । फरीद जी ने नमाज अदा करने के बाद शक्कर की पुड़िया उठा कर खा ली । जब उनकी माता ने आकर पूछा तो फरीद जी ने कहा मैने हर रोज की तरह ही चटाई के नीचे से पुड़िया उठा कर खाई है तो इनकी माता को अत्यन्त आश्चर्य हुआ । फरीद जी ने आरम्भिक शिक्षा अपने पैतृक गांव में प्राप्त करने के बाद मुलतान के एक मदरसे में औपचारिक शिक्षा ग्रहण की । इस समय तक आपको कुर्आन शरीफ जुबानी याद हो गया था आप २४ घण्टे में एक बार कुर्आन शरीफ का सम्पूर्ण अध्ययन कर लेते थे ।

आपके हृदय में ईश्वरीय प्रेम और अद्भुत दिव्य ज्योति को महापुरुष शीघ्र ही भांप लेते थे । इसी बीच आपका सम्पर्क एक योग्य मुरशद ख्वाजा बख्तयार काकी से हुआ । फरीद जी ने उनके पवित्र चरणों में स्वयं को समर्पित करते हुए उन्हें अपना गुरु धारण कर लिया । आपने अनेक सन्तों,सूफियों के साथ रह कर आत्मिक तृप्ति का मार्ग प्रशस्त किया । प्रसिद्ध सूफी ख्वाजा मुइनुदीन

चिश्ती ने आप पर अपार कृपा करके आपको असीम ज्ञान का भण्डार दिया । आपके गुरु ने आपको और अधिक साधना करने के लिए प्रेरित किया । साधना करने के लिए आपको हांसी का स्थान अधिक उपयुक्त लगा । आप लगभग १९-२०वर्ष हांसी में रहे और साधना करके ज्ञान-ज्योति अर्जित की ।

आपकी तप-साधना और योग्यता के कारण आपको मुरशद बख्तयार काकी के परलोक सिधारने के बाद चिश्ती सम्प्रदाय का नेतृत्व सम्भाला गया । अब आप हाँसी छोड़कर अपने पैतृक गांव कोठीवाल आ गए । कुछ समय वहां रहने के बाद आप अयोधन जिसका नाम आजकल पाकपटन (पाकिस्तान) आ गये । यह स्थान आपको भजन-बन्दगी के अनुकूल लगा । फरीद जी ने अपनी मृत्यु से दो मास पूर्व अपने प्रिय और सुयोग्य शिष्य निजामुदीन औलीया को अपने पास बुला कर अपना कम्बल और खड़ाऊँ देकर आलिगंनबद्ध करके अपना उत्तराधिकारी बना दिया । लगभग ९० वर्ष की आयु में मुहर्रम की पांचवी तिथि मंगलवार ६६१ हिजरी ईस्वी को ईशा की नमाज अदा करते करते आप उस परमपिता-परमात्मा के स्वरूप में समा गए ।

सूफी परम्परा की चिश्ती सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कवि शेख फरीदुदीन गंज-ए-शकर का जन्म उस समय हुआ जब भारत राजनैतिक दृष्टि से संघर्ष के दौर से गुजर रहा था । विदेशी लुटेरों व आक्रमणकारियो ने भारत के साँस्कृतिक गौरव को तहस-नहस करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी । उस समय के निर्दयी और निर्मम शासकों से पीड़ित जनता हाहाकार मचा रही थी । ऐसे समय में शेख फरीद ने पंजाब की पुण्यशालिनी धरती पर मानव प्रेम का संचार करने वाली अमरवाणी की रचना की और भ्रमण करते हुए समस्त मानव को अभय दान दिया । पंचमेश गुरु अर्जुन देव जी द्वारा उनकी वाणी को श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित किया जाना उनकी पावन वाणी की महत्ता और लोकप्रियता का पुष्ट प्रमाण है । यही कारण है कि शेख फरीद को सूफी और गुरुमत दोनों ही परम्पराओं में समान रूप से सम्मान मिला है । जहां तक शेख फरीद की वाणी की प्रामाणिकता का प्रश्न हैं । हम आलोचकों व विद्वानों द्वारा दर्शाये गए तथ्यों व प्रमाणों द्वारा ही किसी ठोस निष्कर्ष तक पहुँच सकते हैं । वैसे तो ऐसी महान रचना और रचनाकार के विषय में कोई भी प्रश्नचिन्ह लगाना धृष्टता ही होगी लेकिन अन्तत: हमें इस प्रश्न का उत्तर ढूँढना ही होगा । इसी कारण आज भी इस विषय में विद्वानों में मतैक्य न होने के कारण अनुसंधान कार्य निरन्तर जारी है । यही कारण है कि शेख फरीद की रचना का लघु आकार होते हुए भी उस पर हिन्दी व पंजाबी भाषा में अनेक शोध कार्य हो चुके हैं ।

अधिकांशतः श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित शेख फरीद की वाणी को ही सर्वसम्मति से विद्वानों द्वारा प्रामाणिक माना जाता है । श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्लोक फरीद जी के अन्तर्गत कुल १३० श्लोक हैं जिनमें चार (३२, ११३, १२०, १२४) गुरु नानक देव जी के हैं, पांच (१३,५२,१०४,१२२,१२३) गुरु अमर दास जी के, एक गुरु रामदास जी का (१२१) और आठ (७५,८२,८३,१०५,१०८ से १११ तक) गुरु अर्जुन देव जी के दर्शाये गएं हैं । शेष ११२ श्लोक बाबा फरीद जी के हैं । इनके अतिरिक्त ४ शब्द भी बाबा फरीद जी के दर्ज हैं । दो राग आसा में तथा दो राम सूही में रचे गए हैं ।

शेख फरीद की इस रचना के विषय में मैकालिफ ने यह शंका उत्पन्न किया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित फरीद जी के नाम के अन्तर्गत रचना शेख ब्रह्म अथवा शेख इब्राहीम की रचना है और फरीद उसका उपनाम है । क्योंकि पुरातन जन्म साखियों में गुरु नानक साहिब की फरीद की गद्दी के संचालक शेख ब्रह्म से संगोष्ठी बताई गई है । इस गोष्ठी के समय शेख ब्रह्म अनेक श्लोक उच्चारण करते हुए बताया गया है । यही श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी संकलित है । मैकालिफ की इस पुष्टि के लिए फरीद जी का एक श्लोक जिसका अर्थ है कि शेख कोई भी जीवन इस संसार में स्थिर नहीं है । जिस आसन पर हम बैठे हैं उस पर हम से पहले कई बैठ चुके हैं । इस श्लोक के आधार पर इस रचना का रचयिता शेख फरीद नहीं बल्कि उसका कोई गद्दी नशीं है । आदि ग्रंथ श्री गुरु साहिब की रचना १६०४ में फरीद जी के परलोक सिधारने से ३३८ वर्ष बाद सम्पूर्ण हुई । इससे सिद्ध होता है कि शेख इब्राहीम श्री गुरू नानक देव का समकालीन था । अतः श्री गुरु नानक देव जी ने उससे ही रचना ली होगी । डॉ० लाजवंती रामाकृष्णा ने भी मैकालिफ की इस धारणा को स्वीकृति दी है । बावा बुद्ध सिंह ने भी इसी विचार के साथ अपनी सहमति प्रकट की है । वास्तविकता यह है कि शेख फरीद जिसकी वाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है चिश्ती सूफी सम्प्रदाय का एक प्रथम शिष्य नहीं था । इस सम्प्रदाय का प्रवर्तक ख्वाजा अबू ईशाक शामी था जो चिश्त (खुरासान) पीर था । इसलिए उसे चिश्ती कहा जाता था । वह स्वयं हजरत अली की नौवीं पुश्त का मुरशद था तथा उसके बाद मुईनुदीन चिश्ती (अजमेर) आठवीं पुश्त में थे जो कि फरीद जी के गुरु कुतबुद्दीन बखतिआर काकी के भी गुरु थे । जो श्लोक लाजवंती रामाकृष्णा ने शेख इब्राहीम के लिए प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया है वही श्लोक फरीद जी पर भी लागू होता है ।

शेख हैयाती जग न कोई थिरु रहिया ।।
जिस आसिणि हम बैठे केते बैसि गिआ ।। (राग आसा)

अन्य शंका जो फरीद जी की रचना के विषय में आजकल प्रचलित है वह उनकी मुलतानी भाषा सम्बन्धी है । प्राय: कहा जाता है कि यदि यह मान भी लिया जाए कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज रचना बाबा फरीद जी की है तो भी उनकी पंजाबी भाषा तेरहवीं सदी की नहीं लगती । इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि बाबा फरीद जी को पंजाबी भाषा का पितामह कहा जाता है और इनसे पूर्व पंजाबी की किसी रचना का भाषा सम्बन्धी कोई रूप उपलब्ध नहीं है जिससे फरीद की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जा सके । अत: श्री गुरु ग्रंथ साहिब में फरीद जी के नाम पर जो रचना संकलित की गई है वह सम्पूर्ण वाणी शेख फरीद मसऊद फरीद-उ-दीन गंज-ए-शकर की ही है । इसका मुख्य कारण यह है कि गुरु नानक देव जी ने अपनी तीसरी उदासी के दौरान शेख फरीद जी की भूल रचना की पोथी उनके गद्दी नशीं शेख ब्रह्म या इब्राहीम से प्राप्त की और अपनी वाणी सहित इसे सुरक्षित अपने पास रख लिया । यही पोथी बाद में गुरु अंगद, गुरु अमर दास, गुरु रामदास के माध्यम से पंचम गुरु अर्जुन देव तक पहुँची । इन गुरुओं ने फरीद जी के श्लोकों के साथ-साथ कहीं-कहीं स्पष्टीकरण हेतु अपने श्लोक भी दर्ज किए । जिनकी कुल संख्या १८ है । इस प्रकार ११२ फरीद जी के श्लोकों से साथ मिलाकर १३० श्लोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किए गए ।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में फरीद जी के जो श्लोक संकलित हैं उनमें आए संदर्भ फरीद जी के जीवन से काफी हद तक मेल खाते हैं । सीरीउल औलिया, फवाइदुल फवाद खैरउल-मजलिस आदि ग्रंथों में शेख फरीद जी के व्यक्तित्व का जो स्वरूप उपलब्ध है वही स्वरूप उनकी रचना में भी उपलब्ध होता है जो प्रत्येक रचना में रचनाकार का व्यक्तित्व निहित होता है की पुष्टि करता है । यथा उनकी जीवन शैली का एक उदाहरण :-

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ।।
दरवेसां नो लोडीऐ, रूखां दी जीरांदि ।।६०।।

इसी प्रकार काठ की रोटी से जुड़े सन्दर्भ भी ऐसी पुस्तकों में उपलब्ध होते हैं जिनकी रचना शेख इब्राहीम से पहले हो चुकी थी ।

शेख फरीद का समय राजनीतिक दृष्टि से अस्थिरता और अराजकता का समय था । यही कारण है कि उनकी रचना में मृत्यु, भय, ईशस्तुति, महल, कब्र आदि शब्दों के माध्यम से भावाभिव्यंजना की गई है । फरीद जी के नाम भेद का मुख्य कारण लोक संस्कृति के माध्यम से श्रुति'स्मृति परम्परा हो सकता है । अत: भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण ऐसा होना स्वाभाविक ही है । श्री गुरु ग्रंथ साहिब

में भक्त नामदेव और भक्त कबीर की वाणी भी संकलित है वे भी गुरु नानक देव से पूर्व हुए हैं । अतः श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज फरीद वाणी शेख फरीद गंज-ए-शकर की ही है । दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि संकलित वाणी को सम्पादन करने से पूर्व गुरु अर्जुन देव जी ने इसकी प्रामाणिकता के विषय में पूर्णतः खोज कर ली होगी । तुलनात्मक अध्ययन व नए अनुसंधानों से यह भी स्पष्ट हो गया है कि शेख इब्राहीम कोई उच्च दर्जे का कवि या फकीर नहीं था ।

अतः श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में फरीद नामक कवि की जो वाणी संकलित है । वह शेख फरीद-उ-दीन गंज-ए-शकर की ही है । मैकालिफ और उसके अनुकरणीय विद्वानों ने इसकी प्रामाणिकता के विषय में जो सन्दिग्धता व्यक्त की है वह मात्र उनकी अपूर्ण खोज व अल्पज्ञता का ही परिणाम कहा जायेगा । एक विदेशी विद्वान ने भाषा का अधूरा ज्ञान होने के कारण और परिस्थितियों एवं तथ्यों के प्रति जागरूकता न होने के कारण ही फरीदवाणी को अप्रामाणिकता के घेरे में ला खड़ा किया । वह शायद इस बात से अनभिज्ञ था कि इस वाणी को संकलित करने वाले गुरुजन भी विद्वान, कवि, समाज और धर्म के सुधारक थे उन्हें सत्य-असत्य, यथार्थ और मिथ्या की पूर्ण रूपेण परख थी । उनकी इस कसौटी पर फरीदवाणी की प्रामाणिकता असंदिग्ध है ।

फरीद जी ने अपनी वाणी के माध्यम से अपने जीवन के मौलिक अनुभवों को भूले भटके लोगों तक पहुँचाया । मानव को नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी । उन्होनें सामाजिक विषमता दूर करने के लिए मनुष्य को प्रताड़ना करते हुए कहा है कि ईश्वर के दिए हुए पर ही सन्तोष करो दूसरे की समृद्धि देखकर ललचाना नहीं चाहिए ।

रूखी सुखी खाई कै ठंडा पाणी पीउ ॥
फरीदा देखि पराइ चोपडी न तरसाए जीउ ॥२९॥

फरीद जी ने कहा दूसरों को सुधारने की अपेक्षा मनुष्य को पहले अपने आप को सुधारना चाहिए । आदर्श मानव ही दूसरे को सन्मार्ग दिखा सकता है । मनुष्य को सर्वप्रथम अपने अवगुणों को दूर करना चाहिए ।

फरीदा काले मैंडे कपडे काला मैंडा वेस ॥
गुनही भरिया मै फिरा लोग कहे दरवेसु ॥६१॥

मनुष्य को लम्बी आयु की कामना करने की अपेक्षा सत्कार्यों में प्रवृत्त होना चाहिए । अच्छे कर्मों से ही पुण्य प्राप्त होता है । गुणहीन बुरे कर्मों का परित्याग करना चाहिए अन्यथा ईश्वर के सम्मुख लज्जित होना पड़ता है ।

फरीदा जिनी कंमी नाहि गुण ते कंमडे विसारि ॥
मतु सरमिंदा थीवहि सांई दे दरबारि ॥५९॥

सारा संसार ही दुखों का घर है ।मनुष्य को कभी भी इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि केवल मैं ही दुखी हूं । प्रत्येक प्राणी अपनी अपेक्षा दूसरे को सुखी समझता है । दूसरे का दुख देखकर अपना दुख कम लगने लगता है । फरीद जी मानव को आश्वस्त करते हुए कहते हैं ।

फरीदा जे जाणा दुख मुझ कू, दुख सभाइए जगि ॥
ऊचे चढ़ि के देखिया तां घरि घरि एहा अगि ॥८॥

इस दुख से मुक्त होने के लिए फरीद जी ने संसार के भोग विलासों में लिप्त न होने का संदेश दिया है । फरीद जी ने स्वयं गृहस्थी होकर भी आजीवन दरवेश का जीवन व्यतीत किया । वे जल में कमल के समान निर्लेप भाव से अनासक्त रहे । यही उनका वैराग्य सम्बन्धी सन्देश है ।

फरीदा कोठे मंडप माडीयां ऐतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोई न होसी मितु ॥५७॥

सभी प्राणियों में उस ईश्वर का निवास है । वह सृष्टि के कण-२ में विद्यमान है अत: उसे कहीं भी अन्यत्र ढूँढने की आवश्यकता नहीं है । उसे पाने का मार्ग अत्यन्त सरल है । किसी भी जीव से दुर्व्यवहार न करो ।

इकु फिका न गालाइ सभणा मे सचा धणी ॥
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥२९॥

फरीदवाणी बुरे का भी भला करने का सन्देश देती है । इससे बदले की भावना समाप्त होगी । अहम् का नाश होगा । विश्व-बन्धुत्व की
भावना को बल मिलेगा । युद्धों का निराकरण हो सकेगा और विश्व-शान्ति की स्थापना का मार्ग प्रशस्त होगा ।

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हडाई ॥
देही रोगु न लगई पलै सभ किछु पाई ॥३८॥

आत्मवत् सर्व भूतेषु अर्थात् सभी प्राणियों को अपने ही समान समझो । किसी को बड़ा-छोटा, ऊंच नीच न समझो । फरीद जी के अनुसार हमें खाक की भी निन्दा नहीं करनी चाहिए ।

फरीदा खाकु न निंदीऐ, खाकु जेड न कोइ ॥
जीवदिआ पैरा तले मुइआ उपरि होई ॥१७॥

फरीद जी ने अपने इन अमूल्य उपदेशों के द्वारा जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्रतिपादित कर मानवतावाद का धरातल सुदृढ़ किया है । उनकी वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी उनके अपने समय में थी । मानव कल्याण हेतु रची गई दनकी यह वाणी आज के अज्ञानान्धकर में पथभ्रष्ट मानव का मार्ग दर्शन करने में सक्षम सिद्ध होगी ।

शेख फरीद स्वयं नैतिक गुणों की तपोमूर्ति थे । उन्होंने अपने काव्य में भी कट्टरवादी अथवा संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं अपनाया । उन्होने तत्कालीन प्रचलित सम्प्रदायों और धर्मों का विरोध करने की अपेक्षा उनके आदर्शों को अपनाकर मानव को एक ऐसा मार्ग दर्शाया जिस पर चलकर वह निर्विरोध सारे विश्व को जीत सकता है । शेख फरीद ने अपनी कविता द्वारा पारस्परिक प्रेम, त्याग, दया, सेवा, बलिदान, उपकार और सहनशीलता का सन्देश दिया । मानव प्रेम और विश्वबन्धुत्व की भावना को जन-जन तक पहुंचाया । इन्हीं गुणों के कारण शेख फरीद अपने काव्य की जन-जन के हृदय में बिठा सके । उनका काव्य उनके कटु एवं यथार्थ अनुभवों की अभिव्य जना है । यही कारण है कि उनका काव्य नैतिकता की कसौटी पर आज भी पूरा उतरता है और आज के जीवन में भी उतना ही सार्थक है । इससे महान और गुण क्या हो सकता है कि आत्म-संयम और इन्द्रीय निग्रह कर मनुष्य अपने क्रोध को वशीभूत कर ले और बुरा करने वाले का भी भला करे ।

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हडाई ।।
देही रोगु न लगई पलै सभ किछु पाई ।।३८।।

प्रेम की दुहाई देने वालों ने प्रेम के महत्त्व को जाना है तो आत्म बलिदान देकर । आत्मसमर्पण प्रेम की प्रथम शर्त है । अपने इष्ट को पाने हेतु अगर प्राण भी देने पड़ें तो भी कम हैं । फरीद जी ने भी प्रेम के इस महत्त्व का अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है -

जोवन जांदे न डरो, जे सहु प्रीति ना जाइ ।।
फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाई ।।३४।।

इतना ही नहीं प्रेम की ललक इतनी तीव्र हो जाती है कि आँधी, तूफान, वर्षा में भी नहीं दबती । अपने अन्तर में उठे संशय का उत्तर निम्न पंक्तियों में देखें

फरीदा गलीए चिक्कु, दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ।।
चलां त भिजै कंबली, रहां त तुटै नेहु ।।२८।।
भिजउ सिजउ कंबली, अल्ह वरसउ मेहु ।।
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाहि नेहु ।।२४।।

अपने आप को ऊंचा उठाने, महान् बताने के लिए दूसरों के नहीं अपने अवगुणों को देखना चाहिए। अपने को बड़ा कहने वाला व्यक्ति अहंकारी तो हो सकता है महान् नहीं ।फरीद जी के शब्दों में अपने गिरेबां में झांक कर देखो (आत्मालोचन करो) ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु, काले लिखु न लेखु ।।
आपनडे गिरीवान महि सिर नीवां करि देखु ।।६।।

आत्मालोचन के लिए आत्म-नियन्त्रण का होना जरुरी है जो मनुष्य दूसरों की और देख कर उनसे अपनी तुलना करता है, वह हमेशा दुखी होता है । उसमें सब्र, सन्तोष व सहनशीलता का अभाव रहता है । यह गुण तभी आ सकते हैं अगर मनुष्य अपने आप पर नियन्त्रण रख सके । ईश्वर के दिए हुए साधनों पर ही विश्वास रखे दूसरों के ऐश्वर्यो की और देख कर मन न ललचाय ।

रुखी सुखी खाइके, ठंडा पाणी पीउ ।।
फरीदा देख पराई चोपडी, न तरसाए जीउ ।।२९।।

इतना ही नहीं

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ।।
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ।।७४।।

आत्म-नियन्त्रण करने वाला व्यक्ति कभी दूसरे पर निर्भर नहीं करता और न ही करना चाहता है । आत्म-नियन्त्रण से ही संयमित होने की आदत बनती है । आत्म-संयम और आत्म-निर्भरता दोनों का काफी निकट सम्बन्ध है ।सदाचारी मानव में इन दोनों गुणों का होना बहुत जरुरी है । पराधीन सपनेहुं सुख नाहिं की उक्ति के अनुसार मानव दूसरे की अधीनता स्वीकार नहीं करता । वह इससे तो मृत्यु को बेहतर समझता है । फरीद जी ने भी पराधीनता को नकार कर अपने इष्ट से स्वाधीनता पूर्ण जीवन की मांग की है ।

फरीदा बारि पराइऔ बैसना सांई मुझे न देहि ।।
जे तू ऐवैं रखसी, जीउ सरीरहु लेहि ।।४२।।

सदाचारी मनुष्य आडम्बरों से मुक्त जीवन में विश्वास रखता है । कपटी मनुष्य को कभी भी अपने लक्ष्य में सफलता नहीं मिल सकती । जो मनुष्य (कपटी वेश में) आडम्बर युक्त पूजा करते हैं, उन्हें कभी भी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती । एक कपटी भक्त का बगुले के रूप में चित्रण देखें

फरीदा दरीआवे कने बगला बैठा केल करे ।।
केल करेंदे हंस नो अचिंते बाज पए ।।९९।।

अज्ञानी मानव उस ब्रह्म की बाहर वन में ढूंढता है जब कि वह उसके अन्दर ही विद्यमान है । जप तप करके अपने शरीर से अन्याय कर रहा है मगर तो भी उसे प्रभु की प्राप्ति नहीं हुई ।

फरीदा तन सुका पिंजर थीआ, तलीआ चूंडहि काग ।
अजे सु रब न बोहिडउ, देख बन्दे दे भाग ।।९०।।

उदारमना सदाचारी मानव सब में उस एक ईश्वर को ही देखता है वह किसी को छोटा नहीं समझता । उसके विचार में हर मनुष्य को अपने कर्मों का फल अपने आप मिल जाता है । अगर कोई आदमी किसी से विषमता का भाव रखता है तो उसे उसका फल अवश्य मिलेगा । फरीद की दृष्टि में कोई भी वस्तु इस संसार में तुच्छ नहीं है । वह तो खाक (धूल) को भी महान् मानते हैं ।

फरीदा खाकु न निंदीऔ खाकु जेडु न कोई ॥
जीवदिआं पैरां तले मुइआं उपरि होइ ॥ १७॥

सभी प्राणियों को एक समान जान लेने के बाद आत्मभाव पैदा हो जाता है, फिर मनुष्य किसी का बुरा कैसे सोच सकता है । फिर तो उसमें ऐसे गुण आ जाने हैं कि अगर कोई उस पर प्रहार भी करता है तो वह उसका उत्तर भी देना ठीक नहीं समझता । वह महानता की उस अवस्था पर पहुंच जाता है कि क्षमा उसका आभूषण बन जाता है । वह उसे अज्ञानी समझकर क्षमा कर देता है । फरीद जी के अनुसार

फरीदा जो तै मारनि मुकीया तिना न मारे घुंमि ॥
आपनडे घरि जाईऔ पैर तिना दे चुंमि ॥६॥

नम्रता सदाचारी मनुष्य का सर्वोपरि गुण है । लोग भले ही उसे महान् कहें मगर वह अपने आपको सदा अवगुणों से भरपूर और एक सामान्य जीव से अधिक कुछ नहीं समझता । अहं को पास न आने देना ही नम्रता की कसौटी है । फरीद आजीवन इससे बचे रहे । लोग दन्हें दरवेश कहते थे लेकिन उन्होने अपने आपको इस भयंकर रोग से बचाए रखा । वे अत्यन्त नम्रता से कहते हैं

फरीदा काले मैंडे कपडे काला मैंडा वेसु ॥
गुनही भरिआ मै फिरां लोक कहै दरवेसु ॥९१॥

सांसारिक नश्वरता का चित्रण करते हुए अनेक सिद्ध साधक पुरुषों ने इस संसार से लिप्त होने की बात कही है । यही कारण है कि सभी महापुरुष अपने अनुभव के बल पर मनुष्य को अच्छाई और सच्चाई के मार्ग पर चलने का सन्देश देते हैं । फरीद जी ने भी अपने काव्य में संसार की नश्वरता का चित्रण किया है । वहां उनका प्रयोजन भय पैदा करना नहीं न ही संसार से पलायन की प्रेरणा देना है । उनका अभिप्राय तो अच्छे कामों की और उन्मुख करना है । वे विलासिता से विमुख होने को और संकेत हुए कहते हैं

फरीदा कोठे मंडप माडीआ एतु न लाए चितु ॥
मिटी पई अतोलवी कोइ न होती मितु ॥५७॥

अन्यत्र वे लिखते हैं

जे जाणा मरि जाईऔ घुमि न आईऔ ॥
झूठी दुनीआं लगि ना आप वंजाईऔ ॥२॥ राग आसा

फरीद जी अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे उन्होने अपनी लेखनी के द्वारा जनता को सन्मार्ग दर्शाया । अज्ञान के तिमिर को दूर करके ज्ञान की और प्रेरित किया । इसके लिए किसी न किसी गुरु यां पीर की शरण में जाना पड़ता है । गुरु ही माया अथवा विषय विकारों के पर्दे को हटा कर और ज्ञान का दीपक जला कर मनुष्य के जिए सदाचार का पथ आलौकित करता है जिस पर चल कर मनुष्य सांसारिक कष्टों से मुक्ति पा कर अपने जीवन को सफल करता है । गुरु ईश्वर प्राप्ति में सहायक है । कबीर जी ने कहा है

कबिरा ते नर अन्ध है गुरु को कहते और ।
हरि रूठे गुरु ठौर है गुरु रुठे नही ठौर ।।

फरीद जी ने भी गुरु की शरण में जाने और गुरु के प्रति श्रद्धा अभिव्यक्त करने की संकटों से मुक्त कहा है । गुरु ही इस भव-सागर से पार लगा सकता है । जो गुरु की शरण में जाते हैं और उसे अपनी सेवा से प्रसन्न करते हैं उन्हें किसी प्रकार की आंच नहीं आती ।

फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ।।
जो जन पीर निवाजिआ तिनां अंच न लाग ।।८२।।

फरीद जी ने सब्र और सन्तोष को अच्छे गुणों में सर्वश्रेष्ठ माना है । लेकिन यह भावना तभी आ सकती है अगर मनुष्य ईश्वर की इच्छा को सर्वोपरि मान कर उसी की इच्छानुसार प्रसन्न रहे । उसका भाणा माने और उसकी रज़ा में राज़ी रहे । उसकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता फिर मनुष्य बेचारे का क्या वश चलता है । इसी से मनुष्य में सहनशीलता और सन्तोष की भावना प्रबल होती है । गुरु नानक देव जी ने कहा है

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ।।
हुकम रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ।।

फरीद जी ने भी मनुष्य की उसी की इच्छा के अनुकूल चलने का मार्ग दर्शाया है । उसके दिखाए मार्ग पर चलने से मनुष्य कभी भी भटक नहीं सकता । इतिहास साक्षी है जिसने आपको उसकी (प्रभु की) रज़ा के आगे समर्पित किया उसी को सांसारिक विपयों से मुक्ति मिली । वह सादगी पूर्ण जीवनयापन करके भी महानता को प्राप्त हुआ । यही सच्चा मार्ग है । यह सदाचार का मार्ग है । साधक के लिए उसकी इच्छा (हुकम) ही सर्वोपरि है । फरीद जी के अनुसार

कंधी वहण ना ढाहि, तउ भी लेखा देवणा ।।
जिधरि रब रजाइ, वहुणु तिदाऊ गंउ करे ।।८४।।

फरीद जी ने अपने काव्य में उन सभी मानवीय गुणों को भली प्रकार संजोया है जो एक आदर्श मानव के लिए अनिवार्य है । उन्होंने अपनी कविता में कटु से कटु सत्य को

भी इतनी नम्रता और मधुरता से प्रस्तुत किया है कि कहीं भी उपदेशात्मक नीरसता का आभास नहीं होता । अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति भी उनकी कविता में सहज ही हो गई है । वे स्वयं नैतिक गुणों की प्रति मूर्ति थे । सादा जीवन उच्च विचार के धारक शेख फरीद का जीवन नैतिक गुणों से ही ओत प्रोत था । उनके नैतिक गुण व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर होते हैं । उनके अनुसार अगर प्रत्येक व्यक्ति अपने अवगुणों को देख कर अपने को सुधार ले तो सारे समाज का सुधार करने की क्या जरुरत है । समाज स्वत: सदाचारी हो जाएगा ।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम देखते हैं फरीद जी अपनी सम्पूर्ण वाणी में व्यक्तिगत चेतना पर बल देते हैं । वे मनुष्य को आत्मबोध के लिए प्रवृत्त करते हैं । आत्मालोचन सबसे अनिवार्य तत्त्व है आत्मबोध के लिए । मनुष्य दूसरों की अपेक्षा अपनी आलोचना स्वयं करे । अपने अवगुणों को दूर करे । अहं से दूर रहे । सत्य का मार्ग अपनाए । हिंसा का मार्ग त्यागे । बुरे के साथ भी भला करे । इसी से मनुष्य अपने को अन्य मनुष्यों से ऊपर उठा सकता है । यही गुण सदाचार की नींव बनते हैं जिस पर नैतिकता के आदर्शों का प्रासाद निर्मित होता है । तब ईश्वरीय प्रेरणा से मनुष्य नि:स्वार्थ भाव से परोपकार, क्षमा, दया, प्रेम, नम्रता, त्याग, सन्तोष, धैर्य, सहनशीलता, सेवा आदि मानवीय गुणों से अलंकृत हो समाज में आदर पाता है । उसका सदाचार पूर्ण जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है । लोग अच्छाई का अनुसरण स्वयं करने लगते हैं क्योंकि सत्य स्थाई होता है । मानव प्रेम ही ईश्वरीय प्रेम है । अत: मनुष्य मात्र के प्रति सद्वृति रखना ही सच्ची भक्ति है । यही नैतिकता का मुख्य आधार है । ऐसे आदर्शों को अपनाने वाला व्यक्ति ही सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक ख्याति प्राप्त कर सकता है । इसी से विश्वबन्धुत्व एवं मानव-एकता की भावना पनपती है । श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित फरीद जी की सम्पूर्ण कविता इन्हीं नैतिक आदर्शों का प्रेरणा स्रोत है । फरीद जी ने निजी अनुभवों से पूर्ण नैतिक आदर्शों की ही अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है जो आज भी भटके हुए लोगों का पथ-प्रदर्शन करते हैं । अत: श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित फरीद-वाणी मानव के इहलोक और परलोक दोनो के लिए ही उपयोगी है ।

O

फरीदवाणी

(सरलार्थ सहित)

सम्पादकद्वय

डॉ. निर्मल कौशिक

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सरकारी बृजेन्द्र कालेज, फरीदकोट - १५१२०३

एवं

कामायनी कौशिक

अध्यक्षा, हिन्दी विभाग

केन्द्रीय विद्यालय फरीदकोट छावनी–१५१२०३

ऐजूकेटर्ज सोसाईटी,(रजि:) फरीदकोट - 151203

बाबा शेख फरीद जी की वाणी से अमूल्य शिक्षा

1. बुरे कर्म न करो ताकि अन्त में पश्चाताप न करना पड़े ।।59।।
2. अभिमान रहित होकर अपने अवगुणों को देखो ।।6।।
3. जो कुछ भगवान ने आपको दियाहै उसी में सन्तोष करो ।।29।।
4. पराधीन जीवन से मृत्यु श्रेष्ठ है ।।42।।
5. बुरा करने वाले का भी भला करो ।।78।।
6. परमात्मा जंगलों में नहीं जीवों के हृदय में निवास करता है ।।19।।
7. खाक (तुच्छ) की भी निन्दा न करो ।।17।।
8. इस संसार में कोई बुरा नहीं है, सभी जीवों में ईश्वर रहता है ।।75।।
9. जैसा कर्म करोगे, वैसा ही फल मिलेगा ।।23।।
10. प्रहार करने पर भी नम्रता का व्यवहार करना चाहिए ।।7।।

फरीद–वाणी
(सरल अर्थ सहित)
राग–आसा

१ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥
आसा शेख फरीद जी की वाणी ॥
दिलहु मुहबति जिन्हु सेई सचिया ॥
जिन्ह मनि होरु मुख होरु सि कांढे कचिया ॥१॥
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥
विसरिया जिन्ह नामु ते भुई भार थीए ॥ १ ॥ रहाउ ॥
आपि लीए लडि लाइ दरि दरवेस से ॥
तिन्ह धन्नु जणेदी माउ आए सफलु से ॥ २ ॥
परवरदगार अपार अगम बेअन्त तू ॥
जिन्हा पछाता सचु चुम्मा पैर मू ॥ ३ ॥
तेरी पनह खुदाइ तू बखसन्दगी ॥
सेख फरीदै खैरु दीजै बन्दगी ॥ ४ ॥ १ ॥

अर्थ :- बाबा शेख फरीद सच्चे दरवेश के गुणों का वर्णन करते हुए नाम के महत्व को बताते हुए कहते है :-

- जो मनुष्य प्रभु को सच्चे मन से प्रेम करते हैं वे ही सच्चे दरवेश हैं । जिनके मन में कुछ और है तथा मुख से कुछ और कहते है वे झूठे कहकर निकाल दिए जाते हैं ।

- सच्चे दरवेश प्रभु के प्रेम तथा दर्शन के रंग में रंगे रहते हैं । जिन्होने उसके नाम को भुला दिया है वे धरती पर भार है ।

- जिन्हे प्रभु ने अपनी कृपा से स्वीकार कर लिया है वे ही उसकी दरगाह के दरवेश है । ऐसे पुरुषों की माताएं धन्य है । इस संसार में उनका जन्म सफल है ।

- हे ईश्वर! तुम सबके पालनहार हो, तुम्हारा कोई पार नही पा सकता । तू अगम्य है । जिन्होने तेरी इस सच्चाई को पहचान लिया हैं मैं उनके चरण चूमता हूं ।

- फरीद जी कहते हैं कि प्रभु ! मैं तुम्हारी शरण में हूं, तू क्षमा करने वाला है । कृपा करके अपने इस दास को, शेख फरीद को अपनी भक्ति प्रदान करना ।

राग आसा ।।

बोले शेख फरीदु पिआरे अलह लगे ।।
इहु तनु होसि खाक निमाणी गौर घरे ।। १ ।।
आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजडीआ ।
मनहु मचिन्दडीआ ।।१।। रहाउ ।।
जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ।।
झूठी दुनिआ लगि न आपु वंझाईऐ ।। २ ।।
बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ।।
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ।। ३ ।।
छैल लंघदे पारि गौरी मनु धीरिआ ।।
कंचन वन्ने पासे कलवति चीरिआ ।।४।।
सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिया ।।
जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ।।५।।
कतिक कूंजा चेति डउ सावाणि बिजुलीआं ।।
सीआले सौहंदीआ पिर गलि बाहिडीआं ।।६।।
चले चलणहार विचारा लेइ मनो ।।
गंढेदिआं छिअ माह तुंडदिआं हिकु खिनो ।।७।।
जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किन्नी गए ।।
जालण गोरां नालि उलामे जीअ सहे ।।८।।२।।

अर्थ : फरीद जी कहते है कि मित्रों ! प्रभु की भक्ति करो यह शरीर कब्र में जा कर मिट्टी हो जाएगा ।

– मेरा (फरीद का) अपने प्रभु-प्रियतम से तुरन्त मिलन हो जाएगां अगर मैं इस मन रूपी आकाश में विचर रही कामना-कूंजों को रोक लूँ ।

– अगर हमें इस बात का ज्ञान है कि हम सबने एक दिन मरना है और फिर इस संसार में नही आना है तो फिर हमें इस नाशवान संसार के बन्धनों में नही पड़ना चाहिए ।

– सदा सत्य और न्याय की बात करनी चाहिए, झूठ नही बोलना चाहिए । मुरीद को गुरु के बताए हुए मार्ग पर ही चलना चाहिए ।

– सन्त नवयुवकों के समान इस भवसागर को पार कर रहे हैं । उन्हें देख कर कोमल जीव रूपी स्त्रियाँ धैर्य धारण कर रही है । जो जीव सामाजिक पदार्थों में उलझे हैं उनका जीवन आरे में चीरे जाने के समान दु:खो से भरा रहता है ।

– फरीद जी कहते है इस संसार में जीवन शाश्वत नहीं हैं जिस स्थान पर हम हैं इससे कई जीव पहले रह कर जा चुके हैं ?

– कार्तिक मास में कूँजे आकाश में उड़ती हैं । चैत्र मास में झीलों को आग लग जाती है । सावन में काली घाटाओं में बिजली चमकती है तथा सर्दी में मौसम में पति-पत्नी आलिंगनबद्ध होते है ।

– हे मेरे मन ! तू एक बात अच्छी तरह विचार ले कि इस शरीर के बनने में छः माह लगते है लेकिन यह एक क्षण में ही टूट कर बिखर जाता है ।

– हे फरीद ! जमीन आसमान से पूछती है कि मेरे ऊपर रहने वाले अनेक मल्लाह रूपी इन्सान कहाँ गए । उनके मृतक शरीर कब्रों में गल सड़ रहें हैं तथा जीवात्माओं को परलोक में किए कर्मों के बदले उलाहने सहन करने पड़ते हैं ।

१ ओंकार सतिगुरु प्रसादि
राग सूही वाणी शेख फरीद जी की ।।

तपि तपि लुही लुही हाथ मरोरउ ।।
बावलि होइ सो सहु लोरउ ।।
तै सहि मन महि कीआ रोसु ।।
मुझु अवगुन सह नाही दोसु ।। १।।
तै साहिब की मैं सार ना जानी ।।
जोबनु खोइ पाछै पछतानी ।।१।। रहाउ ।।
काली कोइल तू कित गुन काली ।।
अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ।।
पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ।।
जा होइ कृपालु ता प्रभु मिलाए ।। २ ।।
विधण खूही मुन्ध इकेली ।।
ना को साथी ना को बेली ।।
करि किरपा प्रभि साध संगि मेली ।।
जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ।।३।।
वाट हमारी खरी उडीणी ।।
खन्निअहु तिखि बहुतु पिईणी ।।
उसु उपरि है मारगु मेरा ।।
सेख फरीदा पंथु समारि सवेरा ।।४।।१।।

अर्थ : प्रभु के विरह में मैं (जीवात्मा) तड़प रही हूँ । दीवानी होकर उसकी तलाश कर रही हूँ । उसके प्रति मेरा रोष उचित नहीं हैं क्योंकि दोष मुझ ही में है । प्रभु का कोई दोष नही है । हे परमात्मा ! मैने तेरी महत्ता को नहीं जाना । अब जवानी खो कर मैं पछता रहीं हूँ ।

– हे काली कोयल ! किस कारण तेरा रंग काला हुआ है ? कोयल कहती है कि अपने प्रियतम के विरह में मैं जल कर काली हुई हूँ । अगर प्रभु कृपा करेगा तभी उससे मिलन हो सकेगा ।

– जीवन रूपी कुएँ में जीव रूपी स्त्री अकेली है । उसका कोई संगी-साथी नही है । अगर प्रभु कृपा करके उसे साध संगत करा दें तो प्रभु अपने आप उसका साथी बन जाता है ।

– दरवेशी का मार्ग अत्यन्त कठिन है । यह खंड़े की धार से भी तीखा और बारीक हैं । मेरा मार्ग उससे ऊपर हो कर जाता है । फरीद जी कहते है कि इसी मार्ग पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि इसी में मानव का कल्याण हैं ।

सूही ललित

बेडा बन्धि न सकिउ बन्धन की वेला ।।
भरि सरवरू जब उछलै तब तरणु दुहेला ।।१।।
हथु न लाइ कसुंभडे जलि जासी ढोला ।।१।। रहाउ।।
इक आपीनै पतली शह के रे बोला।।
दुधा थणी न आवई फिरि होइ न मेला ।।२।।
कहे फरीदु सहेलीहो सहदु अलाएसी ।।
हंसु चलसी डुमणा अहि तनु ढेरी थीसी ।।३।।२।।

अर्थ : जब सागर में नाव को ठेलने का समय था तब यह काम नहीं किया । अब जब कि सागर उछल रहा है इस समय इसे पार करना कठिन हो रहा है ।

– हे मनुष्य ! कुसुम्म जैसी नाशवान् वस्तुओं से प्रेम न कर क्योंकि ये स्थाई नहीं है ।

– एक तो यह जीव रूपी स्त्री अबला है दूसरे इसका पति (परमात्मा) बहुत निष्ठुर है । जैसे एक बार स्तनों से निकला हुआ दूध पुन: वापिस नहीं जा सकता इसी प्रकार समय बार बार ईश्वर से मिलन के अवसर प्रदान नहीं करता ।

– फरीद जी कहते है कि हे जीवात्माओं ! जब पति (परमात्मा) की आवाज आएगी फिर कोई बहाना नहीं चलेगा । फिर तो आत्मा को जाना ही होगा और यह शरीर मिट्टी की ढेरी बन कर रह जाएगा ।

१औंकार सतिगुरु प्रसादि ।
सलोक शेख फरीद के
जितु दिहाडै धन वरी, साहे लए लिखाइ ।।
मलकु जि कन्नी सुणीदा, मुहु देखाले आइ ।।
जिन्दु निमाणी कढीऔ, हडा कू कडकाइ ।।
साहे लिखे न चलनी, जिन्दू कू समझाइ ।।
जिन्दु वहुटी मरणु वरू, लै जासी परणाइ ।।
आपण हथी जोलि कै, कै गलि लगै धाइ ।।
वालहु निकी पुरसलाति, कन्नी न सुणीआइ ।।
फरीदा किडी पवंदीई खडा न आपु मुहाइ ।।१।।

अर्थ : जिस दिन जीवात्मा, रूपी स्त्री की शादी अर्थात् मृत्यु होनी है वह दिन निश्चित है । मृत्यु उस दिन सामने आकर खड़ी हो जाएगी ऐसा हमने सुना है । वह हमारी अस्थियों कों (तोड़)चूर कर प्राणों को निकाल लेगी । अपने आपको समझा लेना चाहिए कि वह दिन बदला नही जा सकता ।

– इन्सान का जीवन एक दुल्हन है मृत्यु उसका दुल्हा है । वह एक दिन उसे शादी करके जाएगा । मनुष्य अपने ही हाथों अपने जीवन को उसे समर्पित कर किस के गले लग कर रोएगा ? प्रभु की दरगाह का रास्ता बाल से भी बारीक है और वहां किसी की भी आवाज सुनाई नही देती । फरीद जी कहते है कि मृत्यु की आवाजें तुझे साफ सुनाई दे रही है कहीं तुम अज्ञानता में ही इसके जाल में न पड़ जाना ।

फरीदा दर दरवेसी गाखडी चलां दुनीआं भति ।।
बन्नि उठाई पोटली किथे वंञा घति ।।२।।

अर्थ : हे फरीद ! प्रभु के द्वार का दरवेश होना अत्यन्त कठिन काम है, परन्तु मैं संसार की भांति चल रहा हूँ । मैंने (सांसारिक कर्मों की) गठरी बांध कर उठा ली हैं, अब उसे कहां रखूँ अर्थात् सांसारिक कर्मों से छुटकारा कैसे पाऊँ ।

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ।।
सांई मेरे चंगा कीता नाही त हंभी दझां आहि ।।३।।

अर्थ : फरीद कहते है कि (लकड़ी में छिपी अग्नि) के समान यह संसार समझ में ही आता है और न ही इसकी सम्भावनाओं की कल्पना की जा सकती है । मेरे प्रभु ने यह अच्छा किया जो मन में अनासक्ति पैदा कर दी नही तो मैं भी इस अग्नि में जल जाती ।

फरीद जे जाणा तिल थोडडे संमलि बुकु भरी ।।
जे जाणा सहु नंढडा तां थोडा माणु करी ।।४।।

अर्थ : हे फरीद ! यदि मुझे यह पता होता कि श्वास रूपी तिल थोड़े है तो मैं सोच समझ कर अंजुरि भरता अर्थात् संभलकर जीवनयापन करता । यदि मुझे पता होता कि प्रभु रूपी पति अप्रौढ़ (बेपरवाह) है तो मैं अपने यौवन का अभिमान न करती ।

जे जाणा लडु छिजणा पीडी पाइ गंढि ।।
तै जेवडु मै नाहिं को सब जग डिठा हंढि ।।५।।

अर्थ : फरीद जी कहते है कि यदि पता होता कि प्रेम-रूपी पल्लू छीज जाएगा ! तो मैं उसे मजबूत गाँठ लगाता । क्योंकि मैंने घूम कर सारा संसार देख लिया है । हे प्रभु ! तुम्हारे समान कोई भी प्रेमी नही है ।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ।।
आपनडे गिरीवान महि सिरु नीवा करि देख ।।६।।

अर्थ : हे फरीद ! यदि तुम अधिक बुद्धिमान हो तो काले लेख मत लिखो (अपने जीवन को अन्धेरे में मत धकेलो) केवल अपने अन्तःकरण में झांक कर देखो अर्थात् अपने अवगुणों की जांच करो ।

फरीद जे तै मारन मुकिआं तिना न मारे घुंमि ।।
आपनडे घरि जाईऐ पैर तिना दे चुंमि ।।७।।

अर्थ : हे फरीद ! जो लोग तुम्हें घूँसे मारते हैं उन्हें इसके बदले में मारना नहीं चाहिए उल्टा उनके चरणों का चुम्बन कर अपने घर लौटना चाहिए । बदले की भावना की अपेक्षा नम्रता दिखानी चाहिए ।

फरीदा जां तउ खटण वेल तां तू रता दुनी सिउ ।।
मरग सवाइ नीहि जां भरिआ तां लदिआ ।।८।।

अर्थ : हे फरीद ! जब तुम्हारा भलाई (पुण्य) करने का अवसर था तब तुम मोह माया में लीन थे । मृत्यु की नीव दृढ़ हो जाने पर तैयारी पूरी हो जाती है और फिर प्रस्थान करना ही पड़ता है । तत्पश्चात् कुछ कर पाना सम्भव नहीं है ।

देख फरीदा जु थीआ दाडी होई भूर ।।
अगहु नेडा आइआ पिछा रहिआ दूरि ।।९।।

अर्थ : हे फरीद ! देखो तुम्हारी दाढ़ी सफेद हो चुकी है जीवन का अन्त निकट आ गया है और पहला किनारा बचपन दूर रह गया है । अब तो तुम्हें कुछ सोचना चाहिए ।

देख फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ।।
सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ।।१०।।

अर्थ : हे फरीद ! देखो क्या हुआ कि जवानी रूपी शर्करा भी अब वृद्धावस्था में विष के समान हो गई है अर्थात भोग विलास में रुचि नहीं रही है । यह पीड़ा हम अपने स्वामी के बिना किससे कहें ।

फरीद अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कन्न ।।
साख पकन्दी आईआ होर करेन्दी वन्न ।। ११ ।।

अर्थ : हे फरीदा ! सांसारिक रंग रूप को देखकर आंखे कमजोर हो गई हैं बातें सुन सुन कर कान बहरे हो गए हैं । वास्तव में शरीर रूपी खेती जब पकने पर आती है तो उसका रंग बदल जाता है ।

फरीदा काली जिनी न राविआ धउली रावै कोई ।।
करि सांई सिउ पिरहडी रंगु नवेला होइ ।। १२।।

अर्थ : हे फरीद ! जिन लोगों ने जवानी में प्रभु-स्मरण नहीं किया है उनमें से कोई विरला ही बुढ़ापे में करेगा । अगर जवानी में प्रभु से प्रेम करोगे तो स्थाई आनन्द प्राप्त होगा ।

महला- ३

फरीदा काली धउली साहिबु सदा है, जे को चिति करे ।
आपणा लाइआ पिरमु न लगई, जे लोचै सभु कोई ।
एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देई ।।१३।।
(नोट : यह श्लोक तीसरे गुरु अमरदास जी का है)

अर्थ : गुरु अमरदास कहते हैं कि हे फरीद ! यदि कोई व्यक्ति मन लगा कर हरि से प्रेम करे तो जवानी और बुढ़ापे में उसे मिल जाते हैं । परन्तु हरि से प्रेम वही कर सकता है जिसे प्रभु प्रेम का प्याला देता है । क्योंकि प्रेम प्याला प्रभु के हाथ में हैं ।

फरीदा जिन लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ।।
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठ ।।१४।।

अर्थ : हे फरीद ! जिन सुन्दर नेत्रों ने सारे संसार को मोहित किया था वे नेत्र मैंने देखे

हैं । जो नेत्र काजल को अपनी कोमलता के कारण सहन नहीं कर सकते थे आज उनमें पक्षियों ने अण्डे दिए हुए हैं ।

फरीदा कुकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥
जो सैतानि वंझाइआ से कित फेरहि चित ॥१५॥

अर्थ : हे फरीद ! पुकारने, चिल्लाने और हर रोज समझाने पर भी, जिन्हें (जीवात्माओं को) शैतान ने बिगाडा है, वे भला अपना मन कैसे बदल सकते है ।

फरीदा थीउ पवाही दभु जे सांई लोडही सभु ॥
इक छिजहि बिआ लताडी तां सांई दै दरि वाडीअहि ॥१६॥

अर्थ : हे फरीद ! अगर तुम परमात्मा को पाना चाहते होतो मार्ग में पड़ने वाली दूब बन जाओ ।एक तो उसे छीजा जाएगा पुन:पैरों के नीचे रौंदा जाएगा तभी वह (जीवात्मा) ईश्वर के द्वार में प्रवेश कर पाएगी ।

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न काई ॥
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥१७॥

अर्थ : हे फरीद ! खाक अर्थात मिट्टी की निन्दा नहीं करनी चाहिए । मिट्टी जैसा बड़ा (महान) कुछ भी नही है । जीवित मनुष्य के पैरों के नीचे होकर भी मरने पर उसके ऊपर होती है ।

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूडा नेहु ॥
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥१८॥

अर्थ : हे फरीद ! जब लोभ है तो क्या प्रेम झूठा है ? यदि लोभ है तो प्रेम झूठा है । वर्षा में टूटे हुए छप्पर के नीचे कब तक रहा जा सकता है ? अर्थात बहुत देर उसके नीचे ठहरना कठिन है ।

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोडेहि ॥
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढुढेहि ॥१९॥

अर्थ : हे फरीद ! तू जंगलों में अपने पैरों के नीचे काँटों को मसलता हुआ क्यों घूम रहा है ?परमात्मा तो तुम्हारे अन्दर हृदय में रहता है उसे बाहर जंगलों में क्यों ढूँढ रहा है ?

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥
अजु फरीदै कूजडा सै कोहा थीओम्हि ॥२०॥

अर्थ : हे फरीद ! इन टाँगों से जवानी के समय रेगिस्तान में और पहाडों पर तू घूमता फिरता रहा परन्तु आज बुढ़ापे के समीप पड़ा हुआ कूजा (लोटा) भी सौ कोस दूर प्रतीत होता है ।

फरीदा राती वडीआं, धुखि धुखि उठनि पास ।।
धिग तिना दा जीविआ, जिना विडाणी आस ।।२१।।

अर्थ : हे फरीद ! प्रिय की वियोगास्था में रातें बहुत लम्बी हो गई है सो सो कर पीठ दर्द करने लगी है उन्हे धिक्कार है जो प्रियतम को भुलाकर, दूसरे की आशा करते है ।

फरीदा जे मै होदा वारिआ, मिता आइडिआं ।।
हेडा जलै मजीठ जिउ, उपरि अंगारा ।।२२।।

अर्थ : हे फरीद ! यदि मैं अपने घर में आए हुए अपने दोस्तों से कुछ छिपा कर रखूं तो मेरा शरीर मजीठ के समान अंगारों पर जल जाए ।

फरीदा लोडे दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ।।
हंढे उन्न कताइदा पैधा लोडे पटु ।।२३।।

अर्थ : जो किसान कीकर बोकर बजौर के अंगूर की उम्मीद करे उसकी अवस्था ठीक वैसी ही है जो उम्र भर ऊन कातने के बाद रेशमी वस्त्र पहनने की इच्छा करे ।

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ।।
चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ।।२४।।

अर्थ : हे फरीद ; गलियों में कीचड़ है, प्रियतम का घर भी दूर है तो भी प्रियतम से मेरा प्रगाढ़ प्रेम है । अगर मैं मिलने जाता हूँ तो वर्षा में कम्बल भीगता है । यदि नहीं मिलने जाता तो प्रेम भंग होता है ।

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ।।
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ।।२५।।

अर्थ : शेख फरीद उपरोक्त दुविधा का समाधान प्रस्तुत करने हुए कहते हैं :- कम्बल चाहे भीग जाए भले ही निरन्तर वर्षा होती रहे मैं निस्संदेह अपने प्रियतम से मिलूँगा ताकि प्रेम न टूटने पाए ।

फरीदा मै भोलावा पग दा, मतु मैली होइ जाइ ।।
गहिला रूहु न जाणइ, सिरु भी मिटी खाइ ।।२६।।

अर्थ : फरीद कहते है कि मुझे सदा यह भ्रम रहा है कि कहीं मेरी पगड़ी मैली न हो जाए परन्तु मूर्ख यह नहीं जानता कि एक दिन सिर भी मिट्टी खा जाएगी ।

फरीदा सकर खंडु निवात गुडु माखिउ माझा दुधु ।।
सभे वस्तु मिठिआं रब न पूजनि तुधु ।।२७।।

अर्थ : फरीद कहते है कि शक्कर, खांड़ मिश्री, गुड़ व शहद सभी वस्तुए मीठी है परन्तु यह प्रभु के अमृत नाम रस की मधुरता की समानता नहीं कर सकती ।

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख
जिना खाधी चोपडी घणे सहिणगे दुख ।।२८।।

अर्थ : फरीद कहते है कि मेरी रोटी काठ के समान सख्त है और भूख ही साथ खाने वाली सब्जी है जो घी से चुपड़ी रोटियां खाते है वे निस्संदेह बहुत अधिक कष्ट सहन करेंगे।

रुखी सुखी खाइके ठंडा पाणी पीउ ।।
फरीदा देख पराई चोपडी न तरसाए जीउ ।।२९।।

अर्थ : हे फरीद ! अपनी रूखी सूखी रोटी खाकर ठंड़ा पानी पीना चाहिए । दूसरों की चुपड़ी हुई रोटियां देखकर अपने मन को मत ललचाओ ।

अजु न सुती कंत सिउ अंग मुडे-मुडि जाइ ।।
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ।।३०।।

अर्थ : हे फरीद ! मैं केवल आज ही अपने (परमात्मा) प्रियतम के साथ नही सोई जिस कारण मेरे शरीर के अंगों में टूटन हो रही है । जाकर उन परित्यक्ताओं से पूछो कि तुम अपनी रातें कैसे गुजारती हो ?

साहुरै ढोई न लहै, पेइअै नाही थाउ ।।
पिरु वातडी न पुछई धन सोहागणि नाउ ।।३१।।

अर्थ : जिस जीवात्मा रूपी स्त्री की परलोक (ससुराल) में कोई इज्जत नहीं तथा इस लोक (मायके) में भी कोई स्थान नहीं जिसे पति परमात्मा ने भी उपेक्षित किया हुआ है उसका सुहागिन नाम धन्य है । उसे सुहागिन कहना व्यर्थ है ।

महला- १

साहुरै पेईऐ कन्त की कन्तु अगमु अथाहु ।।
नानक सो सोहागणी जु भावे बेपरवाहु ।।३२।।

अर्थ : उक्त श्लोक की व्याख्या करते हुए गुरु नानक देव जी कहते हैं कि हे नानक ! परलोक रूपी ससुराल ओर इस लोक रूपी मायके के घर में जीवात्मा रूपी स्त्री अपने पति की ही है जो अगम्य और अथाह है । जो प्रियतम को अच्छी लगती है वही जीवात्मा रूपी स्त्री वास्तव में सुहागिन है ।

नाती धोती सबही सुती आइ न चिंदु ।।
फरीदा रही सु बेडी हिंग दी गई कथूरी गंधु ।।३३।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि जीवात्मा रूपी स्त्री अच्छी प्रकार स्नान करके प्रियतम की प्रतीक्षा में सजधज कर निश्चिंत हो कर सो गई । उसकी कस्तूरी वाली गन्ध चली गई और हीरे की दुर्गन्ध शेष रह गई ।

जोबन जांदे न डरां जे सह प्रीति न जाइ ।।
फरीदा किती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाई ।।३४।।

अर्थ : हे फरीद ! जवानी के दिन बीतने का मुझे डर नहीं है यदि मेरे परमात्मा रूपी प्रेम न टूटे क्योंकि ऐसे प्रेम के बिना कितने ही यौवन कुम्हला कर सूख गए हैं ।

फरीदा चिन्त खटोला वाणु दुखु बिरह बिछावण लेफु ।।
ऐहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ।।३५।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि ईश्वर प्राप्ति की चिन्ता रूपी खटिया है जो वियोग के दुःख रूपी वाण से बनी हुई है। जिस पर वियोग का बिछौना और लिहाफ पड़ा है । हे स्वामी ! यही हमारा जीवन है ।

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ।।
फरीदा जितु तनि बिरहु न उपजै सो तनु जाणु मसानु ।।३६।।

अर्थ : फरीद जी कहते है कि विरह की रट तो सभी लगाते हैं परन्तु हे विरह ! तुम तो महाराजा की तरह आदरणीय हो क्योंकि जिस शरीर में विरह पैदा ही नहीं हुआ उसे शमशान जैसा समझना चाहिए ।

फरीदा ए विसु गंदला धरीआ खंडु लिवाडी ।।
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाडी ।।३७।।

अर्थ : हे फरीद ! ये सांसारिक चीजें जहरीली गंदलों के समान है जो चीनी में डुबों कर रखी है । एक ऐसे है जो इनको खाकर समाप्त हो गए है एक ऐसे है जो इन्हे त्याग कर इन्हे नष्ट करके चले गए हैं ।

फरीदा चारि गवाइआ हंढिके चारि गवाइआ संमि ।।
लेखा रबु मंगेसिआ तू आहो केरे कंमि ।।३८।।

अर्थ : हे फरीद ! तुमने चार (पहर) इधर उधर घूमकर गंवा दिए और चार पहर सो कर गंवा दिए । मरने के बाद प्रभु तुमसे हिसाब मांगेगा कि तुम्हें जिस काम के लिए भेजा था वह काम तुमने कहाँ तक पूरा किया है ?

फरीदा दरि दरवाजे जाइके किउ डिठी घडीआल ।।
एहु निदोसा मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु ।।३९।।

अर्थ :हे फरीद ! क्या तुमने राज दरबारों के द्वारों पर बजने वाला घड़ियाल देखा है ? उस पर हर एक घण्टे के बाद चोट पड़ती है । जब यह घड़ियाल निर्दोष पीटा जाता है तो हम दोषियों का क्या हाल होगा ?

घडीऐ घडीऐ मारीऐ पहरी लहै सजाइ ।।
सोहेडा घडियाल जिउ दुखी रैणि विहाइ ।।४०।।

अर्थ : उस घड़ियाल को हर घड़ी मार पड़ती है और हर पहर सजा मिलती है उसी के समान ही इस शरीर की अवस्था है, जिसकी जीवन रूपी रात्रि कष्टमयी व्यतीत होती है ।

बूढा होआ सेख फरीदु कंबणु लगी देह ।।
जे सउ वरिह्या जीवणा भी तनु होसी खेह ।।४१।।

अर्थ : हे फरीद ! बूढ़ा होने पर यह शरीर कांपने लगा है । यदि आयु सौ वर्ष भी हो जाए तो भी यह शरीर अन्त में मिट्टी में ही मिलेगा ।

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझे न देहि ।।
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ।।४२।।

अर्थ : फरीद कहते हैं– हे स्वामी ! मुझे किसी के दरवाजे पर कभी मत बैठने देना अगर मुझे इसी प्रकार का जीवन देना है तो इससे अच्छा है मेरे शरीर से प्राण निकाल लो ।

कंधि कुहाडा सिरि घडा वणि कै सरू लौहारू ।।
फरीदा हउ लोडी सहु आपणा तु लोडहि अंगिआर ।।४३।।

अर्थ : फरीद कहते हैं - हे लोहार ! तुम्हारे कन्धे पर कुहाड़ा है और तुम सिर पर पानी का घड़ा लिए वृक्ष के सिरपर इसे काटने के लिए खड़े हो । मैं इसी वृक्ष के नीचे बैठ कर प्रभु की प्राप्ति करना चाहता हूँ और तुम इसे काट कर बाद में जला कर कोयला बनाना चाहते हो ।

फरीदा इकना आटा अगला इकना नाही लोणु ।।
अगै गए सिंञापसनि चोटां खासी कउणु ।।४४।।

अर्थ : हे फरीद ! कुछ लोगों के पास आटा रूपी पदार्थ बहुत अधिक मात्रा में है, कुछ एक के पास नमक जितना भी नहीं है । मृत्यु के पश्चात ही असल पता चलेगा कि किसे अधिक चोटें पड़ती हैं ।

पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ।।
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ।।४५।।

अर्थ : फरीद कहते हैं - जिनके पास नगाड़े बजते थे । सिर पर छत्र झुलाए जाते थे । दरबारी कवि उनका यश गान करते थे । वे लोग भी अन्ततः कब्रिस्तान में अनाथों के समान पड़े हैं ।

फरीदा कोठे मंडप माडीआं उसारेदे भी गए ।।
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ।।४६।।

अर्थ : हे फरीद ! महलों भवनों और चौबारों को बनवाने वाले भी यहां से चले गए और अन्त में कब्रों में दफना दिए गए ।

फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंद न काई मेख ।।
वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ।।४७।।

अर्थ : हे फरीद ! इस शरीर रूपी गोदड़ी को (संभालने के लिए) नाड़ियों रूपी सीवन लगी है । किन्तु जीवात्मा का शरीर से सम्बन्ध रखने के लिए कोई सीवन नहीं है । अपनी अपनी बारी के अनुसार सभी साधक और विद्वान यहां से कूच कर जाते हैं ।

फरीदा दुहु दीवी बलहन्दया मलकु बहिठा आइ ।।
गड़ु लीता घटु लुटिया दीवडे गइआ बुझाइ ।।४८।।

अर्थ : हे फरीद ! इन दोनों नेत्रों के होते हुए भी मौत का फरिश्ता प्राणी के पास आ बैठा । उसने प्राणी के शरीर रूपी किले पर कब्जा कर लिया, प्राणों को लूट लिया और इन नेत्रों के दीपक बुझा गया ।

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ।।
कमादै अरू कागदै कुन्नै कोइलिआह ।।
मंदे अमल करेदिआ एह सजाह तिनाह ।।४९।।

अर्थ : हे फरीद ! देखो कपास पर क्या बीती है उसे बेलने में बेला गया, तिलों को कोल्हू में पीसा गया । ऐसा ही ईख, कागज, मिट्टी की हाँड़ी और कोयलों के साथ होता है । संसार में बुरे काम करने वालों को ऐसे ही कष्ट सहन करने पड़ते हैं ।

फरीदा कन्नि मुसला सूफू गलि दिलि काती गुड वाति ।।
बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ।।५०।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि पाखण्डी लोगों के कन्धे पर मूसला और शरीर पर ऊनी चोगा पहना हुआ है । उनके मुंह में गुड रूपी मधुर वाणी है मगर ह्रदय में अन्धकारमयी रात्रि हैं ।

फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ।।
जो तनु रति रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ।।५१।।

अर्थ : हे फरीद ! अगर कोई व्यक्ति विरक्त पुरुषों के शरीर को काटे तो थोड़ा सा खून भी नहीं निकलेगा । वास्तव में जो शरीर ईश्वर में अनुरक्त है उसमें रक्त नहीं होता ।

महला- ३

इहु तन सभोरतु है रतु बिनु तन्नु न होइ ।।
जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ।।
भै पइअै तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ।।
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भाउ दुरमति मैल गंवाइ ।।
नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ।।५२।।
(नोट :- यह श्लोक तीसरे गुरु अमर दास जी द्वारा रचित है)

अर्थ : यह सारा शरीर रक्तमय है क्योंकि रक्त के बिना शरीर की स्थापना नहीं हो सकती जो शरीर उस प्रभु में अनुरक्त है उससे लोभ रूपी रक्त के डर के कारण शरीर क्षीण हो जाता है । जैसे अग्नि में पड़ कर धातु शुद्ध हो जाती है वैसे ही परमात्मा का भय कुमति रूपी मैल को नष्ट कर देता है । हे नानक ! वे व्यक्ति महान हैं जो प्रभु के प्रेम में लीन हैं ।

फरीदा सोई सरवरू ढुढि लहु जिथहु लभी वथु ।।
छपडि ढूढे किआ, होयै चिकडि डुबै हथु ।।५३।।

अर्थ : हे फरीद ! उस (अच्छी संगति रूपी) सरोवर को ढूँढ लो जिस से नाम रूपी अमूल्य वस्तु प्राप्त हो उस (कुसंगति रूपी) तालाब में ढूँढ़ने से कुछ नहीं मिलता बल्कि हाथ कीचड़ से लथपथ ही होते हैं ।

फरीदा नढी कन्तु न राविउ वडी थी मुईआसु ।।
धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ।।५४।।

अर्थ : फरीद कहते है कि परमात्मा रूपी स्त्री ने यौवनावस्था में प्रभु पति से रमण नहीं किया और वृद्ध होकर मर गई । वह कब्र में पड़ी हुई भी यह पुकारती रहती हैं कि मैं अपने पति से क्यों नहीं मिल सकी ।

फरीदा सिरु पलिआ दाडी पली मुछां भी पलीआ ।।
रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआं ।।५५।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि सिर के बाल पक गए हैं । दाढ़ी भी सफेद हो गई है । हे गाफिल मूर्ख मन ! अब भी तू मौज लूट रहा है अब तो ईश्वर का स्मरण कर ।

फरीदा कोठे धुकणु केतडां पिर नीदडी निवारि ।।
जो दिह लधे गाणवे गए विलाडि विलाडि ।।५६।।

अर्थ : हे फरीद ! घर की छत पर कहां तक भागा जा सकता है अर्थात जीवन बहुत छोटा है । निद्रा को छोड़ कर जो दिन जीवन के मिले है उन्हे ईश्वर रूपी पति के लेखे लगा दो अन्यथा वे सब सांसारिकता में व्यतीत हो रहे हैं ।

फरीदा कोठे मंडप माडीया ऐतु न लाए चितु ।।
मिटी पइ अतोलवी कोई न होसी मित ।।५७।।

अर्थ : फरीद कहते है कि जीव ! इन इमारतों, महलों और चौबारों में अपने मन को लीन मत करो । मरने के बाद तुम्हारे ऊपर अतोल (बहुत ज्यादा) मिट्टी डाली जाएगी तब कोई तुम्हारा साथ नही देगा ।

फरीदा मंडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ।।
साई जाइ सामलि जिथै ही तउ वंजणा ।।५८।।

अर्थ : हे फरीद ! महलों और सम्पति में अपने मन को लीन मत करो बल्कि मृत्यु को चित में धारणा करना चाहिए । उस जगह (परलोक) को भी याद रखो जहाँ आपके अन्तिम समय प्रस्थान करना है ।

फरीदा जिनी कंमी नाही गुण ते कंमडे हिसारि ।।
मतु सरमिंदा थीवहि सांई दै दरबारि ।।५९।।

अर्थ : हे फरीद ! उन कर्मों को छोड़ दो जिनसे (जीवात्मा को) कोई गुण प्राप्त नहीं होता अन्यथा परमात्मा रूपी स्वामी के दरबार में शर्मिन्दा होना पड़ेगा ।

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ।।
दरवेसां नो लोडिऐ रुखां दी जीरांदि ।।६०।।

अर्थ : हे फरीद ! अपने प्रभु (स्वामी) की सेवा करके अपने मन के भ्रमों को दूर करो । दरवेशों को चाहिए कि वे वृक्षो के समान ही सहनशील बने ।

फरीदा काले मैंडे कपडे काला मैडा वेसु ।।
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ।।६१।।

अर्थ : हे फरीद ! भले ही मेरे कपड़े काले है और मेरा वेश भी काला ही है । मैं अपने गुनाहों से भरपूर जीवन व्यतीत कर रहा हूँ फिर भी लोग मुझे दरवेश कहते है ।

तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ।।
फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइ ।।६२।।

अर्थ : फरीद कहतें हैं कि पानी की अधिकता के कारण जली (नष्ट) हुई खेती पुन: नहीं उग पाती चाहे उसे पानी में डूबो ही क्यों न दिया जाए । इसी प्रकार प्रभु की ओर से छोड़ी गई जीवात्मा संयोगावस्था को नहीं पा सकती ।

जां कुआरी तां चाउ वीवाही तां मामले ।।
फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीए ।।६३।।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं जब जीवात्मा रूपी स्त्री कुँवारी होती है तो उसके मन में शादी की इच्छा होती है । मगर शादी होने पर वह उलझनों में पड़ जाती है । वह अपने मन में पश्चाताप करती है और मन में सोचती है कि मैं पुन: कुँवारी नही बन सकती ।

कलर केरी छपडी आइ उलथे हंझ ।।
चिंजु बोडनि ना पीवहि उडण संदी डझ ।।६४।।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं कि संसार रूपी खारे पानी के तालाब पर हंस रूपी सन्त आए है परन्तु वे उस पानी में चोंच नहीं डुबोते । विरक्त रहते हुए उनके मन में सदा ब्रह्म लोक की तरफ उड़ जाने की तीव्र उत्कण्ठा बनी रहती है ।

हंसि उडरि कोध्रे पइआ लोकु विडारणि जाउ ।।
गहिला लोकु न जानदा, हंसु न कोध्रा खाइ ।।६५।।

अर्थ : फरीद जी कहते है कि साधक रूपी हँस उड़ कर संसार की सांसारिकता रूपी कोधरे की फसल में चला गया । सामान्य लोग उसे वहां से उड़ाते हैं । वे मूर्ख यह नहीं जानते कि हँस कोधरे को नही खाता ।

चलि चलि गईआ पंखीआं जिनी बसाए तल ।।
फरीदा सरू भरिआ भी चलसि थके कवल इकल ।।६६।।

अर्थ : हे फरीद ! जिन जीवों रूपी पक्षियों ने संसार सरोवर को बसाया हुआ है वे अपनी बारी आने पर चले गए है (नष्ट हो गए हैं) यह संसार रुपी सरोवर भी नष्ट हो जाएगा । केवल निर्लेप भाव से रहने वाले सन्त रूपी कमल ही बच पाँएगे ।

फरीदा इट सिराणे भुइ सवणु कीडा लडियों मासि ।।
केतडिआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ।।६७।।

अर्थ : हे फरीद ! (कब्र में सिर के नीचे) एक ईट पड़ी होगी । भूमि तेरा बिस्तर होगा । मांस कीड़े खा रहें होगें । एक तरफ लेटे लेटे कितने ही युग बीत जाएंगे ।

फरीदा भन्नी घडी सवन्नवी टूटी नागर लजु ।।
अजराईल फरेसता कै घरि नाठी अजु ।।६८।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि शरीर रूपी सुन्दर घड़ा फूट गया है और साँसों की सुन्दर (मजबूत) डोरी भी टूट गई है । हे मृत्यु देव (इजराइल फरिश्ते) आज किसके घर जा कर मेहमान बनना है ?

फरीदा भन्नी घडी सवन्नवी टूटी नागर लजु ।।
जो सजण भइ भारु थे से किउ आवहि अजु ।।६९।।

अर्थ : हे फरीद ! शरीर रूपी सुन्दर घड़ा फूट गया है और साँसों की सुन्दर डोरी भी टूट गई है । जिन जीवात्माओं ने पुण्य नहीं किए थे और भूमि पर भार थे पुन: आज कैसे अपनी अवस्था को पाएंगे ?

फरीदा बेनिवाजा कुतिआ एह न भली रीति ।।
कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ।७०।।

अर्थ : फरीद कहतें हैं कि हे नमाज न अदा करने वाले (कुत्ते रूपी) पुरुष ! यह अच्छा व्यवहार नहीं

है कि तुम नमाज़ अदा करने के लिए पांचों वक्त कभी भी मस्जिद में नहीं आए ।

उठु फरीदा उजु साजि सुबह निवाज गुजारि ।।
जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ।।७१।।

अर्थ : हे फरीद ! उठो और मुंह धोकर (उजु करके) प्रात: काल की नमाज पढ़ो जो सिर परमात्मा (स्वामी) के सामने नहीं झुकता उस सिर को काट कर उतार देना चाहिए ।

जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ।।
कुन्ने हेठि जलाईऐ बालण संदे थाइ ।।७२।।

अर्थ : हे फरीद ! जो सिर (बन्दगी में) ईश्वर के आगे नहीं झुकता उसका क्या करना है? ऐसे सिर को तो ईंधन के रूप में हांडियों के नीचे जला देना चाहिए ।

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिनी तू जणिउहि ।।
तै पासहु उइ लदि गए तू अजै न पतीणोहि ।।७३।।

अर्थ : हे फरीद ! तुम्हारे माता-पिता कहां चले गए, जिन्होने तुम्हें जन्म दिया था । वे भी तुम्हारे पास से चले गए है और तुझे अब भी विश्वास नहीं हुआ कि यह संसार नश्वर है ।

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ।।
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ।।७४।।

अर्थ : फरीद कहते हैं हे जीवात्मा ! मन रूपी भूमि में दुविधा रूपी ऊबड-खाबड़ जमीन को समतल कर लो फिर तुम्हें नरक की आग नहीं झेलनी पड़ेगी ।

महला-५

फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ।।
मंदा किसनो आखीऐ जां तिसु बिनु कोइ नाहि ।।७५।।

अर्थ : हे फरीद ! इस सृष्टि को रचने वाला परमात्मा सृष्टि में और सृष्टि परमात्मा में निवास करती है । जब परमात्मा बिना कुछ है ही नही तो फिर बुरा किसे कहा जाए ।

फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ।।
पवनि न इती मामले सहा न इती दुख ।।७६।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि जिस दिन दाई ने नाभिनाल को काटा था अगर उसी दिन गला काट देती तो इतने सांसारिक झंझट न झेलने पड़ते । न इतने कष्ट सहने पड़ते ।

चबण चलण रतन्न से सुणीअर बहि गए ।।
हेडे मुती धाह से जानी चलि गए ।।७७।।

अर्थ : फरीद का कथन है चबाने वाले दांत, चलने वाली टांगें, देखने वाली आँखे और सुनने वाले कान सभी अपना काम करना छोड़ गए हैं । शरीर पुकार पुकार कर कह रहा है कि मेरे मित्र चले गए हैं ।

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ।।
देहि रोगु न लगइ पलै सबु किछु पाई ।।७८।।

अर्थ : हे फरीद ! बुरे आदमी का भी भला करो और मन में क्रोध न करो । ऐसा करने से शरीर रोगी नहीं होता और सब पदार्थों की प्राप्ति हो जाती हैं ।

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ।।
नउबति बजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ।।७९।।

अर्थ : हे फरीद ! यह संसार एक सुहावना बाग है । जीव रूपी पक्षी इसमें मेहमान की तरह आते हैं । प्रात:काल से ही नगाड़ा बज रहा है इसलिए तुम अब प्रस्थान की तैयारी कर लो ।

फरीदा राति कथूरी वंडीऐ, सुतिआ मिले न भाउ ।।
जिना नैण नीद्रावले तिन्ना मिलणु कुआउ ।।८०।।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं कि रात को प्रभु के नाम रूपी कस्तूरी बांटी जाती है । जो सोए रहते हैं उन्हे इस कस्तूरी का भाग नहीं मिलता । जिनकी आँखों में निन्द्रा भरी हो उन्हें क्या मिलेगा ?

फरीदा मैं जाणिया दुख मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ।।
ऊचे चड़ि कै देखिया तां घरि घरि एहा अगि ।।८१।।

अर्थ : हे फरीद ! मैं तो यह समझता रहा के मैं ही इस संसार में दुखी हूँ । लेकिन जब मैंने थोड़ा अपनेपन से ऊपर उठ कर देखा तो प्रत्येक जीव इसी आग में जल रहा है ।

महला-५

फरीदा भूमि रंगावलि मंझि विसूला बाग ।।
जो जन पीरि निवाजिआ तिना अंच न लाग ।।८२।।

(नोट : यह श्लोक पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी का है)

अर्थ : श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि हे फरीद ! यह भूमि अत्यन्त सुहावनी है । इसमें विषय वासनाओं का विषैला बाग है । जिस पर गुरु ने कृपा की है उन्हे विष रूपी आंच नहीं छू पाती ।

महला-५

फरीदा उमर सुहावडी संगि सुवनडी देह ।।
विरले कोइ पाईअनि जिना पिआरे नेह ।।८३।।

अर्थ : श्री गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं कि हे फरीद ! जिन जीवों का उस प्रभु से प्रेम है उनका जीवन रूपी सुन्दर और शरीर सुहावना है । परन्तु इस अवस्था को कोई बिरला जीव ही प्राप्त कर सकता है ।

कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ।।
जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाउ गंउ करे ।।८४।।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं हे दरिया ! किनारों को मत गिरा, तुमने भी अन्त में हिसाब चुकाना है । कवि उस ईश्वर की इच्छा का ध्यान करते हुए कहता है सब उस ईश्वर के अधीन है । दरिया का प्रवाह भी उसी तरफ जाता है जिधर उस प्रभु की इच्छा होती है ।

फरीदा डूखा सेती दिहु गइआ सूलाँ सेती राति ।।
खडा पुकारे पातणी बेडा कपरि वाति ।।८५।।

अर्थ : हे फरीद ! दिन दुख में और रातें कांटे से पैदा होने वाली चुभन सहित बीतती है । किनारे पर खड़ा हुआ गुरु रूपी नाविक पुकार कर कह रहा है कि तुम्हारा बेड़ा विषय विकारों रूपी लहरों में फंस चुका है । इसे प्रभु भक्ति करके बचा ले ।

लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेति ।।
बेडै नो कपरु किया करे जे पातणा रहै सुचेति ।।८६।।

अर्थ : फरीद जी कहते है कि दुखों की लम्बी नदी बह कर किनारों को नष्ट कर रही है यदि गुरु मल्लाह सावधान है तो तूफानी लहरें जीवात्मा का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती ।

फरीदा गली सु सजण वीह इकु ढुढदी न लहा ।।
धुखां जिउ मांलहि कारणि तिंना मापिरी ।।८७।।

अर्थ : हे फरीद ! बातों में फुसलाने वाले सज्जन बीसों मिल जाते है । वास्तव में सज्जन एक भी नहीं मिलता । इसके अभाव में गोबर के चूरे के समान झुलस रहा हूँ । (क्योंकि इस स्वार्थी और निर्दयी संसार में मेरे माता पिता ने मुझे अकेला छोड़ दिया है)?

फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ।।
कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ।।८८।।

अर्थ : हे फरीद ! यह शरीर बहुत भौंकने वाला है हर रोज इसकी मांगे कौन पूरी करता है ? मैं अपने कान बन्द कर लूंगा फिर मुझे इसकी एक भी आवाज नहीं सुनाई देगी ।

फरीदा खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंनि ।।
जो जो वंझै डीहडा सो उमर हथ पवन्नि ।।८९।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि परमात्मा ने (नाम रूपी) पकी हुई खजूरें तथा शहद की नदियां प्रदान की है । आसक्ति के कारण जो जो दिन बीत रहा है उससे आदमी की उम्र कम होती जा रही है ।

फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआ खूडहि काग ।।
अजै सु रबु न बहुडिउ देखु बन्दे के भाग ।।९०।।

अर्थ : हे फरीद ! साधना करते हुए यह शरीर सूख कर पिंजर हो गया है । वासना रूपी कौए पैरों के तलवों पर चोचें मार रहे है । मनुष्य का भाग्य देखो परमात्मा अभी तक सुध लेने नहीं पहुंचा ।

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ।।
ऐ दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आसु ।।९१।।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं कि कौओं ने नोच नोच कर मेरे शरीर कर सारा मांस खा लिया है । परन्तु हे कौओं ! मेरी इन दोनो आँखों को मत छूना क्योंकि मुझे इन आँखों से प्रिय दर्शन की आशा है ।

कागा चूंडि न पिजरा बसै त उडरि जाहि ।।
जितु पिजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदु खाहि ।।९२।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं कि हे कौओं ! मेरे शरीर के पिंजर को चोंचें न मारों यदि हो सके तो यहां से उड़ जाओ क्योंकि इस पिंजर में मेरा स्वामी (प्रभु) बसता है, इसका मांस मत खाओ ।

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ।।
सरपर मैथे आवणा मरणहु न डरिआहु ।।९३।।

अर्थ : फरीद जी कहते हैं कि हे जीव ! बेचारी कब्र तुझे बुला रही है । हे बेघर आदमी अपने घर चले आओ आखिरी समय में तुमने मेरे पास ही आना है । अत: तुझे मृत्यु से नहीं डरना चाहिए ।

ऐनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ।।
फरीदा लोकां आपो आपणी मैं आपणी पई ।।९४।।

अर्थ : हे फरीद ! इन आखों के देखते देखते कितनी ही सृष्टि चली गई अर्थात् नष्ट हो गई । इस सृष्टि में सभी लोग अपने स्वार्थों में लीन है । अत: मैं भी अपनी ही चिन्ता में लीन हूँ ।

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ।।
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सबु जगु तेरा होइ ।।९५।।

अर्थ : हे फरीद ! अगर तुम अपने आप में सुधार कर लोगे तो मुझे (परमात्मा को) मिल सकोगे । मुझे (प्रभु को) मिलकर तुझे आनन्द मिलेगा । यदि तू मेरा (परमात्मा का) बन गया तो सारा संसार तुम्हारा हो जाएगा ।

कंधी उतै रुखडा किचरकु बनै धीरु
फरीदा कचै भांडे रखीऐ किचरु ताई नीरु ।।९६।।

अर्थ :हे फरीद ! नदी के किनारे पर खड़ा वृक्ष कब तक धीरज धरेगा । मिट्टी के कच्चे बर्तन में पानी कब तक रखा जा सकता है अर्थात् नहीं रखा जा सकता । अत: मृत्यु निश्चित है ।

फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ।।
गोरा से निमाणीआं बहसनि रूहां मलि ।।
आखी सेखां बन्दगी चलणु अजु कि कलि ।।९७।।

अर्थ : हे फरीद ! महल सूने पड़ गये हैं और जीवात्माएं पृथ्वी के नीचे कब्रों में पड़ी हैं । उन कब्रों में जीवात्मांओं ने आसन जमा लिया है । हे शेख तुम बन्दगी कर लो क्योंकि तुम्हें आज या कल प्रस्थान करना ही पड़ेगा ।

फरीदा मउतै दा बन्ना ऐवे दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ।।
अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूक पवै काहाहा ।।
इकना नो सब सोझी आई इकि फिरदे बेपरवाहा ।।
अमल जे कीतिआ दुनी विचि से दरगह उगाहा ।।९८।।

अर्थ : हे फरीद ! मृत्यु का किनारा नदी के किनारे के समान क्षरित होने वाला है । पापियों के लिए जलता हुआ नरक सुना जाता है । जहां पर पापियों का हाहाकार सुनाई देता है । कुछ लोगों को तो सत्य का ज्ञान हो गया है किन्तु कुछ लोग अब भी बेपरवाह होकर घूम रहे है । जो कर्म इस संसार में किए जाते हैं वे प्रभु के दरबार में जीवात्मा के पाप-पुण्य की साक्षी भरते हैं ।

फरीदा दरीआवै कन्नै बगुला बैठा केल करे ॥
केल करेदे हंस नो अचिंते बाज पए ॥
बाज पए तिस रब दे केला विसरीआं ॥
जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआ ॥९९॥

अर्थ : हे फरीद ! जीवात्मा रूपी बगुला संसार रूपी नदी के किनारे पर क्रीड़ा करता है । उस मौज मस्ती में लीन जीवात्मा को अचानक यम रुपी बाज आ दबोचते हैं तब जीवात्मा सांसारिक क्रीड़ाओं को भूल जाता है । जीवात्मा जिन बातों की अपने मन में कभी कल्पना भी नहीं करता ईश्वर वे बातें भी कर देता है । ऐसा उस परमात्मा का विधान हैं

साढे त्रै मन देहरी चलै पाणी अन्नि ॥
आइउ बन्दा दुनी विचि वति आसूणी बन्नि ॥
मलकल मउत जां आवसी सब दरवाजे भन्नि ॥
तिनां पिआरिया भाईआ अगै दिता बन्नि ॥
वेखहु बन्दा चलिआ चहु जनिआ दे कन्नि ॥
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥१००॥

अर्थ : हे फरीद ! आदमी का साढ़े तीन मन का शरीर अन्न और जल से संचालित होता है । मनुष्य ससांर में अनेक आशाँए लेकर आया है । परन्तु उन आशाओं की पूर्ति से पूर्व ही मृत्यु इन्द्रियों रूपी द्वारों को तोड़कर आ जाती हैं । मनुष्य के प्रिय भाई उसे आगे भेजने के लिए बाँध देते हैं । फरीद जी कहते हैं देखो आदमी चार व्यक्तियों के कन्धों पर सवार हो कर जा रहा हैं । मनुष्य ने जो कर्म इस संसार में किए हैं ईश्वर के दरबार में वही काम आएंगे ।

फरीदा हउ बलिहारी तिन पंखीआं जंगलि जिना वासु ॥
ककरू चुगनि थलि वसनि रब न छोडिनि पासु ॥१०१॥

अर्थ : हे फरीद ! मैं उन पक्षियों पर बलिहारी जाता हूँ , जिनका जंगलों में निवास है । भले ही वे कंकर चुगते हैं । रेगिस्तान अथवा जंगलों में रहते हैं तो भी वे उस प्रभु का आसरा नहीं छोडते ।

फरीदा रुति फिरी वणु कंबिआ पत झडे झडि पाहि ॥
चारे कुंडा ढूढीआं रहणु किथाऊ नाहि ॥१०२॥

अर्थ : हे फरीद ! उम्र रूपी मौसम में बदलाव आ रहा है, शरीर रूपी वृक्ष कांप रहा है । बाल रूपी पत्ते झड़ रहें हैं । मैने चारों और खोज करके देखा है कि कही भी स्थायी निवास नहीं

है । संसार नश्वर है ।

फरीदा पाडि पटोला धज करी कंबलडी पहिरेउ ।।
जिनी वेसी सहु मिलै सेइ वेस करेउ ।।१०३।।

अर्थ : हे फरीद ! मैं अपने रेशमी वस्त्र को फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े करके उसकी जगह छोटा सा कंबल धारण कर लूँ। जिस वेश में प्रभु मिल सके वही वेश बना लूँ ।

महला- ३

काइ पटोला पातडी कंबलडी पहिरेइ ।।
नानक घर बैठिया सहु मिले जे नीअति रासि करेइ ।।१०४।।
(नोट : यह श्लोक तीसरे गुरु श्री अमर दास जी का है ।)

अर्थ : हे जीवात्मा ! तू किस लिए रेशमी वस्त्र फाड़ती है ? और छोटे कंबल को धारण करती है । गुरु अमरदास कहते हैं कि यदि मन को पवित्र कर लिया जाए तो घर बैठे ही ईश्वर रूपी पति से मिलन हो जाता है ।

महला- ५

फरीदा गरबु जिना वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ।।
खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ।।१०५।।

अर्थ : हे फरीद ! जिन लोगों को प्रशंसा, धन और जवानी का घमण्ड़ है, वे संसार में पति रूपी परमात्मा से वंचित हो जाते हैं । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार ऊँचे टीले वर्षा से वंचित रह जाते हैं ।

फरीदा तिना मुख डरावने जिना विसारउनु नाउ ।।
ऐथै दुख घनेरिआ अगै ठउर न ठाउ ।।१०६।।

अर्थ : हे फरीद ! जिन लोगों ने परमात्मा का नाम भुला दिया वे बड़े भयानक मुख वाले हैं । इस लोक में भी कष्ट भोगते हैं और परलोक में भी उन्हें ठौर प्राप्त नहीं होता ।

फरीदा पिछल राति न जगिउहि जीवदडी मुइउहि ।।
जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिउहि ।।१०७।।

अर्थ : हे फरीद ! यदि तुमने प्रात:काल जाग कर हरि का नाम स्मरण नहीं किया तो जीवित रहते भी जीव मृतक के समान हैं । यदि तुमने प्रभु को भुला दिया है तो भी प्रभु ने

तुम्हे नहीं भुलाया है ।

महला-५

फरीदा कन्तु रंगावला वडा वेमुहताजु ।।
अलह सेती रतिया एहु सचावा साजु ।।१०८।।

(नोट : श्लोक संख्या १०८ से १११ तक गुरु अर्जुन देव जी द्वारा रचित है ।)

अर्थ : हे फरीद ! परमात्मा रूपी पति बहुत ही रसिया तथा स्वावलम्बी है । उसके प्रति आसक्ति होना ही उसकी प्राप्ति के लिए असल में श्रृंगांर करना है ।

महला-५

फरीदा दुखु सुख इकु करि दिल ते लाहि विकारु ।।
अलह भावे सो भला तां लभी दरबारु ।।१०९।।

अर्थ : गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं - हे फरीद ! दु:ख और सुख को एक समान समझ कर मन के विकारों को दूर कर दो । प्रभु की इच्छा को अच्छाई समझ कर स्वीकार करने में ही तुझे उसके दरबार अर्थात् ब्रह्मलोक की प्राप्ति होगी ।

महला-५

फरीदा दुनी बजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ।।
सोइ जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ।।११०।।

अर्थ :फरीद को सम्बोधित करते हुए गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं - हे फरीद ! यह संसार माया के बजाने से बज रहा है उसके साथ ही तुम भी बज रहे हो । केवल वही प्राणी माया के बजाने से नहीं बजता जिस पर ईश्वर की कृपा है ।

महला-५

फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कंमि ।।
मिसलु फकीरा गाखडी सु पाईऐ पूर करंमि ।।१११।।

अर्थ : फरीद को सम्बोधित करते हुए गुरु अर्जुन देव जी कहते हैं - हे फरीद !जीवात्मा का हृदय तो इस संसार में लीन है । परन्तु इस सृष्टि का सुख किसी काम का नहीं । फकीरो का जीवन बड़ा ही कठिन है जो पूर्ण कर्म करने से ही प्राप्त होता है ।

पहिले पहरै फुलडा फलु भी पछा राति ।।
जो जागनि लंहनि से साई कंनो दाति ।।११२।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि रात के पहले पहर की गई साधना फूल के समान है और रात के पिछले पहर की गई साधना फल के समान है । जो व्यक्ति प्रात:काल जागते हैं वही प्रभु से यह उपहार पाते हैं ।

महला- १

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ।।
इकि जागदे ना लहनि इकना सुतिआ देइ उठालि ।।११३।।
(नोट : यह श्लोक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित हैं)

अर्थ : ईश्वर द्वारा दी जाने वाली वस्तुएं उसकी इच्छा पर निर्भर है । उस पर किसी का वश नहीं है । एक ऐसे है जो जागते हुए भी प्राप्त नहीं कर सकते और एक ऐसे हैं जिन्हें ईश्वर सोऐ हुए को जगाकर देता है ।

ढूढैदीऐ सुहाग कू तउ तनि काई कोर ।।
जिना नाउ सुहागणी तिनां झाक न होर ।।११४।।

अर्थ : हे जीवात्मा रूपी स्त्री ! तुम प्रभु (स्वामी) को ढूँढ रही हो । तुम्हारे शरीर में कोई कमी अवश्य है जो तुझे स्वामी नहीं मिला । वास्तव में उसी को सुहागिन कहना चाहिए जिनके प्रभु (स्वामी) के बिना दूसरे का आश्रय प्राप्त नहीं है ।

सबर मंझ कमाण ए सबर का नीहणो ।।
सबर सदा बाणु खालकु खता न करी ।।११५।।

अर्थ : यदि मन में संतोष की कमान हो इसी का चिल्ला हो तथा सन्तोष ही का बाण चढ़ाया जाए तो प्रभु इसके लक्ष्य को चूकने नहीं देता ।

सबर अन्दर साबरी तनु एव जालेनि ।।
होनि नजीकि खुदाइ दे भैतु न किसै देनि ।।११६।।

अर्थ : सन्तोषी व्यक्ति सन्तोष की अवस्था में रहकर तन को जलाते है, कठोर तप करते हैं । जो व्यक्ति इस तप से उस प्रभु से अपना निकट सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं वे अपने इस अनुभव का भेद किसी के आगे प्रकट नहीं करते ।

सबरु एहु सुआउ जे तू बंदा दिड करहि ।।
वधि थीवहि दरीआउ तुटि न थीवहि वाहडा ।।११७।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि सन्तोष का उद्देश्य भी यही है कि हे प्राणी ! तुम इसे हृदय में अच्छी तरह धारण करोगे तो तुम दृढ़ होकर परब्रह्म रूपी महानदी बन जाओगे फिर छोटा नाला कभी नहीं बनोगे ।

फरीदा दरवेसी गाखडी चोपडी परीति ॥
इकनि किनै चालीऔ दरवेसाइ रीति ॥११८॥

अर्थ : हे फरीद ! दरवेश का जीवन बड़ा ही कठिन है और तुम्हारी आसक्ति (सांसारिक्ता) चिकनी चीज है । कोई एक बिरला ही दरवेशों की रीति को निभाने में सफल होता है ।

तनु तपै तनूर जिउ बालण हड बलन्नि ॥
पैरी थकां सिरि जुलां जे मूं पिरि मिलन्नि ॥११९॥

अर्थ : फरीद कहते हैं कि भले ही मेरा शरीर तन्दूर की तरह तपने लगे हड्डियां ईंधन के समान जलने लगे । ईश्वर प्राप्ति के लिए अगर पैरों से थक जाऊं तो मैं सिर के बल भी चलने के लिए तैयार हूँ ।

महला- १

तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥
सिरि पैरी किआ फेडिआ अंदरि पिरी निहालि ॥१२०॥
(नोट : यह श्लोक श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित है)

अर्थ : हे फरीद ! शरीर को तन्दूर के समान मत तपाओ, अस्थियों को ईंधन के समान न जलाओ । सिर और पैरों का क्या दोष है जो इन्हे कष्ट दे रहे हो । अगर सचमुच ईश्वर को पाना है तो अपने अन्दर देखो ।

महला- ४

हउ ढूढदी सजणा सजनु मैडे नालि ॥
नानक अलखु न लखीऔ गुरुमखि देइ दिखालि ॥१२१॥
(नोट : यह श्लोक श्री गुरु राम दास जी द्वारा रचित है)

अर्थ : श्री गुरु राम दास जी कहते हैं मैं जीवात्मा रूपी पति को संसार में ढूंढ़ रही हूँ जब कि वह परमात्मा रूपी पति मेरे साथ रहता है । उसे स्वयं देखा जा सकता है कोई गुरुमुख व्यक्ति ही उसे दिखा सकता है ।

हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥
डुबि मुए बग बपुडे सिरु तलि उपर पाउ ॥१२२॥

अर्थ : श्री गुरु अमर दास जी कहते हैं कि साधक रूपी हंसों को तैरते हुए देख का सब बगुले रूपी घमण्ड़ी पुरुषों के मन के भी इच्छा हुई । परन्तु वे बेचारे डूब कर मर गए उनके पांव ऊपर तथा सिर नीचे है ।

महला- ३

मैं जाणिआ वडहंसु है तां मै कीता संगु ।।
जे जाणा बगु बपुडा जनमि न भेडी अंगु ।।१२३।।

अर्थ : श्री गुरु अमर दास जी कहते हैं कि मैने उसे हंस रूपी साधक कर उसकी संगति की थी । अगर मैं यह जानता कि वह दंभी बगुला है तो मैं पूरा जन्म उसका अंग भी न छूता ।

महला- १ ॥

किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ।।
जे तिसु भावे नानका कागहु हंस करे ।।१२४।।

अर्थ : श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि क्या हंस क्या बगुला जिस पर भी उस की (प्रभु की) कृपा दृष्टि हो जाए वही श्रेष्ठ है । अगर उस प्रभु की इच्छा हो तो वह कौए को भी हंस के रूप में बदल सकता है ।

सरवर पंखी हेकडो फाहीवाल पचास ।।
इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ।।१२५।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि हे जीवात्मा ! इस संसार रूपी सरोवर में तू अकेला है तुझे फॉसने वाले पचासों शिकारी (विषय-विकार) हैं । यह शरीर लहरों में घिर गया है । तुझे ईश्वर ही बचा सकता है ।

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ।।
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवे कंतु ।।१२६।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि हे सखी ! वह कौन सा अक्षर है ? वह कौन सा गुण है ? वह कौन सा शिरोमणि मन्त्र है ? वह कौन सा वेश है ? जिसे मैं धारण करूँ और जिसे धारण करने से परमात्मा रूपी पति मेरे वश में हो जाए ।

निवणु सु अखरू खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ।।
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवै कंतु ।।१२७।।

अर्थ : हे सखी ! नम्रता रूपी अक्षर, क्षमा रुपी गुण तथा मधुर वचन रूपी शिरोमणि मन्त्र इन तीनों को वेश के रूप में धारण करने से प्रभु रूपी स्वामी (पति) वश में हो सकता है ।

मति होदी होइ इआणा ।। ताण होदे होइ निताणा ।।
अणहोदे आपु वंडाए ।। को ऐसा भगतु सदाए ।।१२८।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि जो आदमी स्वयं को बुद्धिमान होते हुए भी अज्ञानी समझता है, बलशाली होते हुए बलहीन समझता है तथा अभाव ग्रस्त लोगों में अपना सर्वस्व बांट देता है वह कोई एक (बिरला) व्यक्ति ही भक्त कहलाने का अधिकारी होता है ।

इकु फिका न गालाइ सबना मै सचा धणी ।।
हिआउ न कैही ठाहि माणक सब अमोलवे ।।१२९।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि किसी से भी फीका मत बोलो क्योंकि सभी जीवों के हृदय में सत्य का स्वरूप वह धनी ईश्वर निवास करता है । किसी के हृदय को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए क्योंकि सभी जीव अमूल्य माणिक है ।

सभना मन माणिक ठाहुण मूलि मचांगवा ।।
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कहीदा ।।१३०।।

अर्थ : फरीद कहते हैं कि हे प्राणी ! सभी जीवात्माओं के मन मणि के समान है इसीलिए किसी को भी कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए । अगर तुम ईश्वर रूपी प्रियतम को मिलने की तीव्र इच्छा रखते हो तो किसी भी प्राणी के हृदय को दुखी नहीं करना चाहिए ।

-------------000-------------

नोट : फरीद वाणी का देवनागरी लिप्यन्तरण करते समय हृस्व दीर्घ मात्राओं को यथावत् रख दिया है ताकि वाणी का मूल रूप सुरक्षित रह सके । फरीदवाणी का रूपांतरण तथा सरल अर्थ करते समय अगर कोई भूल हो गई हो अथवा त्रुटि रह गई हो तो सम्पादकद्वय क्षमायाचक है ।

-------------000-------------

कविता

अरज़ उनकी सुनता है ....

बेबी कनुप्रिया

हो जाते हैं जो लोग इसके करीब,
अरज़ उनकी सुनता है बाबा फरीद ।।
जो लोग इसके द्वार पर आते हैं,
उनके दुःख पल में दूर हो जाते हैं,
चाहे कोई अमीर हो चाहे गरीब,
अरज़ उनकी सुनता है बाबा फरीद ।।
श्रद्धा के साथ जो शीश झुकाते हैं,
वे खाली झोली भरकर ले जाते हैं,
बदल जाता उनका एकदम नसीब,
अरज़ उनकी सुनता है बाबा फरीद ।।
जो यहाँ मन्नत मानकर जाते हैं,
मुँह माँगी मुरादें वो यहाँ से पाते हैं,
टिल्ला बाबा फरीद है अज़ब अज़ीब,
अरज़ उनकी सुनता है बाबा फरीद ।।
जो फरीद जी की शिक्षा अपनाते हैं,
भजन-बन्दगी कर फरीद के हो जाते हैं,
वो फरीद के हैं फिर उनका है फरीद,
अरज़ उनकी सुनता है बाबा फरीद ।।
सेवक तेरे दूर दूर से तेरे दर आते हैं,
दिन रात सदा ही वो तेरे गुण गाते हैं,
एक बार तू भी आके बनजा खुशनसीब,
अरज़ उनकी सुनता है बाबा फरीद ।।

समर्पण

नित्य प्रातः स्मरणीय, गुणीजन गणना अग्रगण्य, कर्मठ,
ज्योतिष शास्त्र व कर्मकाण्ड के प्रकाण्ड विद्वान, सफल वैद्य
लोकप्रिय संस्कृताध्यापक के रूप में लब्धप्रतिष्ठ



परम पूज्य स्वर्गीय पं. कर्मचन्द शास्त्री जी

जिनके आशीर्वाद से इस पुस्तिका को तैयार करने
हेतु सम्बल और उत्साह उद्भूत हुआ के

श्री चरणों में सादर समर्पित

परिचय



डॉ. निर्मल कौशिक

एम.ए. (हिन्दी-संस्कृत-पंजाबी)

एम.फिल., पी.एच.डी. (हिन्दी)

आयुर्वेदरत्न, संगीत भूषण ।

सम्प्रति : विभागाध्क्ष, हिन्दी विभाग, सरकारी बृजेन्द्र कालेज, फरीदकोट सम्पर्क : ०१६३९-२६३०१७

कृतियाँ :

१. भाई गुरदास : व्यक्तित्व और कृतित्व २. सिद्ध संस्कृत व्याकरण ३. इन्दु इक बिन्दु दो (पंजाबी भाषानुवाद) ४. सिद्ध जीवन गाथा ५. युगपुरुष : बाबा शेख फरीद ६. कबित-सवैये : भाई गुरदास ७. साहित्य विविधा ८. शब्दों की अर्चना (काव्य संकलन) ९ रघुप्रिया (खण्ड काव्य) १०. सूफी दरवेश : बाबा शेख फरीद (पंजाबी) ११. हिन्द रक्षक : श्री गुरु तेग बहादुर जी १२. शुभ चिन्तक (निबन्ध संकलन) प्रैस में १३. वाणी श्री गुरु तेग बहादुर जी १४. सिद्ध हिन्दी शीघ्र बोध प्रैस में १५. श्री गुरु गोबिन्द सिंह और निर्मल सन्त परम्परा १६. भगवान परशुराम जीवन और सन्देश (तृतीय संस्करण) १७. सूफी साधक : शेख फरीद १८. आस्था के फूल (संकलन) १९. श्री सनातन पूजन पद्धति, २०. श्री सनातन हवन पद्धति (प्रैस में) २१ श्री हनुमान पाठ त्रयी २२ श्री हरि स्मरण, २३ लोक कहै दरवेस

परिचय



कामायनी कौशिक

एम.ए. बी.एड. एम.फिल. (हिन्दी)

सम्प्रति : अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, केन्द्रीय विद्यालय,

फरीदकोट छावनी

कृतियाँ :

१. संक्षिप्त जीवन : गुरुतेग बहादुर (अनूदित) दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, सीसगंज, चाँदनी चौंक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

२. सूफी दरवेश : बाबा शेख फरीद (पंजाबी) ३. हिन्दी शिक्षण और अशुद्धि संशोधन

४. फरीदवाणी का सन्दर्भ ७. उपन्यास लेखिका रजनी पनिकर की

६. कनुप्रिया का शैली वैज्ञानिक अध्यन (शेध) नारी दृष्टि । (प्रैस में)

८. हिन्द रक्षक : श्री गुरु तेग बहादुर जी

पाडुलिपियाँ

१ निबन्ध सौरभ : (संकलन) २ हिन्दी समीक्षा : विविध आयाम

३ काव्यार्चना : काव्यसंकलन

सम्मान : अनेक सामाजिक व शैक्षिक संस्थाओं/ संस्थानों द्वारा सम्मानित

समभागी : विभिन्न संकलनों, पुस्तकों, स्मारिकाओं में लगभग २० आलेख, कविताएँ प्रकाशित ।

आकाशवाणी प्रसारण : आकाशवाणी जालन्धर के विभिन्न कार्यक्रमों में अनेकधा रेडियों-वार्ता प्रसारण ।